कलीसिया परिशिष्ट 4

(कलीसिया के सस्कार)
मसीही बपतिस्मा की विधि

मसीही बपतिस्में का अर्थ के लिए मैनुएल 6, अध्याय 13 में से देखें: **क,ख,ग**
= बाइबल गद्यांशों को लिखें।

घ.मसीही बपतिस्में का सारांश	**पेज 123**
ड़. पानी से बपतिस्मा देने का व्यवहारिक तरीका	**पेज 125**
च. प्रारम्भिक मसीहियों में बपतिस्में की तस्वीरें	**पेज 133**
छ. कौन पानी का बपतिस्मा दे सकता है।	**पेज 134**
ज. कलीसियाई परम्पराओं में बपतिस्मा तथा बच्चों का बपतिस्मा	**पेज 136**
झ.पानी का बपतिस्मा लिए जाने का समय	**पेज 138**
ञ. प्रश्न क्या किसी व्यक्ति को दोबारा बपतिस्मा दिया जाना चाहिए	**पेज 147**
ट. मसीहियों और बपतिस्मे में सम्बन्ध	**पेज 149**

ग.मसीही बपतिस्में का सारांश

1.मसीही बपतिस्मा पानी और आत्मा द्वारा बपतिस्मा है।

मसीही बपतिस्मा सबसे बढ़कर पवित्र आत्मा का अदृश्य बपतिस्मा है।

मसीही पानी का बपतिस्मा पवित्र आत्मा के अदृश्य बपतिस्मा का प्रत्यक्ष चिन्ह प मुहर है।

केवल यीशु मसीह ही लोगों को पवित्र आत्मा के द्वारा बपतिस्मा प्रदान करते हैं। स्वर्ग से मिलने वाला नया जन्म एक सौगात है।

मसीही लोग विश्वासियों को पानी का बपतिस्मा देते हैं। पानी का बपतिस्मा इस बात का चिन्ह और प्रमाण है कि यहां पर कुछ ठोस काम हुआ है।

(1) आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ है:

- यीशु मसीह की मृत्यु में उसके सहभागी हो जाना (रोमियों 6:3,4 व 5)
- और यीशु मसीह के पुनरूत्थान में उसके सहभागी हो जाना(रोमियों 6:4,5)

(2) पवित्र आत्मा में बपतिस्में का परिणाम निम्न होता है:

- हृदय का खतना होना(रोमियों 2:28-29) जिसके द्वारा पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया जाता है,ताकि आप आगे को पाप के गुलाम न बने रहें (रोमियों 6:6; इफिसियों 4:23)
- और त्रीएक परमेश्वर के साथ जुड़ना(मत्ती 28:19) जिसके द्वारा हमारा नया मनुष्यत्व यीशु मसीह के द्वारा उद्धार के निमित्त पूरे किये गये कामों में भागीदार हो जाता है।(इफिसियों 1:3-7; 2:5-7)।

(3) आत्मा से बपतिस्मा पाने का निम्न क्षेत्रों पर प्रभाव होता है:

- आपके भूतकाल पर : अब)आप नया जन्म पा चुके हो(पुनर्जीवन)(तीतुस 3:4-8),आप धर्मी ठहराये जा चुके हो(आपके सारे पाप धुल चुके हैं)(रोमियों 4:6-8)और आपको पाप की शक्ति और दोष से (रोमियों 6:6-7)और परमेश्वर के क्रोध से छुड़ा लिया गया है(रोमियों 5:9-10)
- आपके वर्तमान पर : अब आप परमेश्वर के वाचा के लोगों के एक नागरिक (गलातियों 3:26-29), परमेश्वर के राज्य के नागरिक(यूहन्ना 3:3-8) और मसीह की विश्वव्यापक देह के एक अंग हैं(1कुरिन्थियों 12:12-13; इफिसियों 2:19-22; 3:6)। अब आप ज्यादा से ज्यादा पवित्र और धार्मिक जीवन जीना चाहते हैं, जी सकते हैं और जीयेंगे(रोमियों

6:11-14,19), आप लगातार मसीह के चेले के रूप में उन्नति करते और दूसरों की यीशु का चेला बनने में सहायता करते रहेगें(मत्ती 28:19-20)

- और आपके भविष्य पर: आपका आत्मा(यूहन्ना 3:1-3) और आपकी देह (फिलिप्पियों 3:20-21)पूरी तरह से यीशु मसीह के सदृश हो जाएगी और आप हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में वास करेगें(प्रकाशितवाक्य 21:1-5)।

2. जब पानी के बपतिस्मे और पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को एक दूसरे से अलग करके देखा जाता है।

(1) जब पानी के बपतिस्में को पवित्र आत्मा के बपतिस्में से अलग कर दिया जाता है।

जब पानी के बपतिस्में का पवित्र आत्मा के बपतिस्में से अलग कर दिया जाता है, तब एक गैर बाइबलीय शिक्षा का उदय होता है,अर्थात मनुष्यों द्वारा दिये जाने वाले पानी के बपतिस्में से वह कार्य (accomplishes) हो जाता है जो केवल परमेश्वर की कर सकता है (accomplish) ।

उदारहण के लिए, कई लोग शिक्षा देते हैं कि पानी का बपतिस्मा लेने से परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होता है जिससे वह खुद अपनी स्वेच्छा और अपने भले कामों के द्वारा उद्धार कमा सकता है। दूसरे लोग सिखाते हैं कि पानी का बपतिस्मा लेने वरन हाथ रखे जाने से भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है(नया जन्म)।

(2) जब पवित्र आत्मा के बपतिस्में को पानी के बपतिस्में से अलग कर दिया जाता है।

और जब पवित्र आत्मा के बपतिस्में को पानी के बपतिस्में से अलग कर दिया जाता है, तो एक दूसरी गैर बाइबलीय शिक्षा का जन्म होता है, जैसे कि, पवित्र आत्मा के बपतिस्में से हमें पवित्र आत्मा द्वारा नये जन्म के अलावा कुछ और प्राप्त होता है!

उदारहण के लिए, कुछ लोग शिक्षा देते हैं कि पवित्र आत्मा के बपतिस्में तथा कुछ समय बाद पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म,पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने वाले व्यक्ति को विशेष शक्ति और वरदान प्रदान करते हैं। मसीहियों को स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा के बपतिस्मे, जो कि *जीवन में एक ही बार घटने* वाली घटना है(प्रेरितों 11:14-18),और पवित्र आत्मा से भरे जाने में अन्तर को समझना चाहिए जो कि *लगातार चलने वाली एक प्रक्रिया* है(इफिसियों 5:18)।

3. आत्मा से बपतिस्मा देने और पानी से बपतिस्मा देने के तरीके का वर्णन नहीं दिया गया है।

हालांकि "बपतिस्मा देने के लिए" इस्तेमाल किये गये ग्रीक शब्द(ग्रीक:बैपटाइज़ो) का सामान्य तौर पर अर्थ: किसी चीज़ को डुबोना, थोड़ा डुबोना वरन पौंछ देना होता है, **बाइबल में तथा प्रारम्भिक मसीही साहित्यों में ग्रीक शब्द "बैपटाइज़ो" का इस्तेमाल केवल आनुष्ठानिक व प्रतीकात्मक रूप में किया जाता था।**[1]

"बपतिस्मा देना" शब्द का इस्तेमाल किया गया :

- पुराने नियम में बपतिस्मा की क्रिया के रूप में (शुद्धिकरण समारोह)
- नये नियम में आत्मा के द्वारा बपतिस्मा दिये जाने के रूप में जिससे एक व्यक्ति के सारे पापों को धो डालता है और उसे मसीह का पहिरावा पहिनाता है।
- नये नियम में पानी का बपतिस्मा दिये जाने के रूप में जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने का प्रमाण है
- और कष्टों की बहुतायत के रूप में(सताव के द्वारा)

मसीही बपतिस्मा को लेकर सारे मसीही विश्वासियों का विचार एक सा ही होना चाहिए। और सारे मसीहियों को नये विश्वासियों को बपतिस्में के अर्थ को बाइबल आधारित शिक्षाओं द्वारा समझाना चाहिए बपतिस्में से सम्बन्धित अपनी परम्परागत राय पेश नहीं करना चाहिए।

क्योंकि बाइबल में बपतिस्में के किसी भी तरीके का सुझाव, वर्णन, आदेश या निषेध नहीं किया गया है, इसलिए मसीहियों को यह आज़ादी है कि वे पानी से बपतिस्में के जिस भी रूप को अच्छा समझें वे दें। लेकिन कोई भी मसीही जन किसी दूसरे व्यक्ति पर अपना बपतिस्मा देने का व्यवहारिक तरीका थोप नहीं सकता और न ही किसी को दूसरे पर तंज कसना या उसे किसी दूसरे तरीके का इस्तेमाल करने पर दोषारोपण करना चाहिए।

हालांकि आत्मा में बपतिस्मा पाना अति अनिवार्य है: "तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है"(यूहन्ना 3:7), आत्मा द्वारा बपतिस्मा को कोई मनुष्य भ्रष्ट या खराब नहीं कर सकता। हालांकि पानी द्वारा बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गयी है: "तुम उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें वब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओ"(मत्ती 28:19),पानी से बपतिस्मा लेने के किसी भी एक तरीके को मसीहियों पर जबरजस्ती थोपा नहीं जा सकता। हर एक मसीही नया जन्म पाने(उद्धार की शुरूआत) से लेकर महिमा पाने(उद्धार के अन्त तक) तक की यात्रा के बीच में यात्री है। बोना और

पानी देना एक मसीही की जिम्मेदारी है, लेकिन बढ़ौत्तरी और स्थिरता प्रदान करना परमेश्वर का काम है। (1कुरिन्थियों 3:5-9)।

ड़. पानी से बपतिस्मा देने का व्यवहारिक तरीका

1. पानी में बपतिस्मा लेना एक आज्ञा है (मत्ती 28:19)

"बपतिस्मा देना" शब्द सारी जातियों के लोगों को मसीह के चेले बनाने के एक महान आदेश के साथ में जुड़ा है। पानी का बपतिस्मा देना किसी मसीही के लिए कोई विकल्प नहीं, वरन मसीह की आज्ञा है। जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं उनके लिए यह ज़रूरी है कि वे किसी दूसरे विश्वासी से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के एक नाम में होकर बपतिस्मा लें। उन्हें चेले बनाने की मनसा को ध्यान में रखते हुए बपतिस्मा देना चाहिए और इस कारण उन्हें यीशु मसीह की (अर्थात बाइबल की) सभी आज्ञाओं को मानना सिखाना (ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं करनी चाहिए) चाहिए।

> जब पॉलुस का मन परिवर्तन हुआ तो हनन्याह ने उसे आज्ञा दी। "एक *बार और हमेशा के लिए* उठ जा (आदेश,भूतकाल, सक्रिय) और *एक बार* में ही हमेशा के लिए बपतिस्मा ले (आज्ञा,सामान्य भूत काल, हस्तक्षेप), और परमेश्वर का नाम जीवन भर के लिए *एक ही बार* लेकर (आज्ञा, सामान्य भूत,हस्तक्षेप) अपने पापों को धो डाल (प्रेरितों 22:16)

जबकि यीशु मसीह पर विश्वास करना उद्धार पान के लिए पूर्वापेक्षा है, लेकिन पानी का बपतिस्मा उद्धार पाने के लिए कोई पूर्वापेक्षा नहीं है(मरकुस 16:16)। जबकि विश्वास ओर आत्मा में बपतिस्मा मसीह की विश्वव्यापी देह में सदस्यता पाने के लिए पूर्वापेक्षा है(1 कुरिन्थियों 12:13),लेकिन बाइबल में कहीं भी स्थानीय कलीसिया में सदस्यता लेने के लिए पानी का बपतिस्मा लेना अनिवार्य हो ऐसी शिक्षा कभी नहीं दी गयी है(या किसी विशेष डिनोमिनेशन में)। किसी भी कलीसिया की औपचारित सदस्यता लेना बाइबल में कहीं देखने को नहीं मिलता है। विभिन्न वर्गों या डिनोमिनेश में बंट जाना आत्मिक अपरिपक्वता का एक प्रत्यक्ष चिन्ह है (1 कुरिन्थियों 3:1-4)।

2. पानी का बपतिस्मा किसी दूसरे मसीही द्वारा दिया जाता है।

जब कोई विश्वासी ये सोचे कि वह कैसे यीशु मसीह पर विश्वास करने लगा, तो उसे सबसे पहले यह जरूर जान लेना चाहिए कि परमेश्वर की ओर अपना पहला कदम बढ़ाने से बहुत पहले परमेश्वर अपनी ओर से उसकी तरफ पहल कर चुका था(इफिसियों 1:4-5)। परमेश्वर ने उसे सुसमाचार सुनाने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति का इस्तेमाल किया। क्योंकि सुसमाचार सुनकर ही कोई व्यक्ति मसीह की ओर मुड़ता और उस पर विश्वास करता है(रोमियों 10:17)।

जब पवित्र आत्मा किसी के हृदय को आप पार भेदता है, तब वह जन एक ही बार में अपना मन फिरा लेता है अर्थात पश्चाताप कर लेता है(ग्रीक : मिटानोईयो)(आदेशसूचक,सामान्य भूतकाल)और उसे पानी का बपतिस्मा ले लेना चाहिए(ग्रीक :बैपटाईज़ो)(आदेशसूचक, सामान्य भूत, कर्मवाच्य)(प्रेरितों 2:37-39)। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन(सुसमाचार) को मान लेता, और *हमेशा के लिए एक ही बार* पानी का बपतिस्मा ले लेता है(ग्रीक:बैपटाईज़ो) तो वह जाकर पहले से विश्वास में आये लोगों की मण्डली में शामिल हो जाता है(प्रेरितों के काम 2:41,47)। वह प्रेरितों से *शिक्षा पाने*(अर्थात बाइबल से उपदेश या संदेश सुनने,संगति करने(दूसरे मसीहियों के साथ),रोटी तोड़ने(प्रभु भोज और प्रीती भोज करने) और प्रार्थना करने में लौलीन रहता है। (प्रेरितों 2:42)।

नया विश्वासी अपने आपको बपतिस्मा नहीं देता है, वरन उसे दूसरे विश्वासी के द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है। इस तरह से वह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर ने उसे अपने अनुग्रह से पवित्र आत्मा देने के लिए कदम उठा लिया है(यूहन्ना 1:12-13)। याद रखें कि पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाने का(नया जन्म पाने का) सबसे दृष्टिगोचर चिन्ह परिपक्वता में बढ़ना, सक्रिय होना और विश्वव्यापी कलीसिया में (अर्थात स्थानीय कलीसिया का एक भाग होना)दृढ़ विश्वासी(चेला) बनना होता है।

3. पानी का बपतिस्मा यीशु मसीह के नाम में दिया जाता है

इसके दो अर्थ हैं:

(1) बपतिस्मा देने वाला कुछ कहता है।

परमेश्वर की ओर से बपतिस्मा देने वाला नये विश्वासी का परमेश्वर की ओर से साक्षी देता है। बपतिस्मा देने वाल उसे त्रीएक परमेश्वर के "नाम में"(Greek: eis to onoma) (मत्ती 28:19) या यीशु मसीह के "नाम से" (Greek: en tó onomati) बपतिस्मा देता है (प्रेरितों 10:48)। वह मसीह के अधिकार में होकर बपतिस्मा देता है और घोषणा करता है कि पवित्र आत्मा का

[1] A Greek-English Lexicon of the New Testament and other Early Christian Literature, by Bauer, Arndt and Gingrich, 1957

बपतिस्मा पाकर उस विश्वासी का रिश्ता उससे बन गया है जो उस नाम को धारण किये हुए है अर्थात त्रीएक परमेश्वर या यीशु मसीह (जो कि त्रीएक परमेश्वर का दृष्टिगोचर तस्वीर है)।

(2) बपतिस्मा लेने वाला भी कुछ कहता है।

बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति भी कुछ कहता है। वह परमेश्वर और वहां पर उपस्थिति लोगों को गवाही देता है। बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति "यीशु के नाम को पुकारता है" या उसके नाम को अंगीकार करता है(प्रेरितों 2:38) (Greek: epi tó onomati) या "उसका नाम लेना"(Greek: epikalasamenos to onoma autou) (प्रेरितों 22:16)। इसका निम्न अर्थ होते हैं: वह यीशु मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करता है

- वह मसीह के सारे दावों को स्वीकार करता है
- वह मसीह की सारी शिक्षाओं के अधीन हो जाता है।
- वह मसीह पर अभी निर्भरता का अंगीकार करता है
- वह मसीह की आज्ञाओं को मानने वह उसकी सेवा करने का समर्पण करता है।

या हो सकता है कि वह परमेश्वर से एक प्रार्थना करे। और हो सकता है कि वह मण्डली से उसके साथ एक गीत गाने के लिए कहे। या हो सकता है कि वह मण्डली के सामने अपनी व्यक्तिगत गवाही को पेश करते हुए बताए कि वह किस प्रकार आज पानी का बपतिस्मा लेने की स्थिति तक पहुँचा।

4.बपतिस्मा देने के तरीका का बाइबल में कोई वर्णन नहीं किया गया है।

बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि पानी का बपतिस्मा पवित्र आत्मा द्वारा प्राप्त बपतिस्मे का एक चिन्ह व प्रत्यक्ष प्रमाण है। लेकिन बपतिस्मा किस समय दिया जाना चाहिए या बपतिस्मा देने का सही तरीका क्या है, बाइबल में न तो सिखाया गया, न कहीं वर्णन किया गया और न ही किसी तरीके से बपतिस्मा दिये जाने से रोका गया है। *ऐतिहासिक कालों के हिसाब से उसके तरीकों में परिवर्तन किये गये* हैं। मण्डली या शिक्षक को नये विश्वासी को पानी के बपतिस्मे और पवित्र आत्मा के बपतिस्मे में अन्तर बताते हुए मसीही बपतिस्मे का स्पष्ट मतलब समझा देना चाहिए। लेकिन बाइबल में पानी का बपतिस्मा देने के एक तरीके का कोई विवरण नहीं दिया गया या नये विश्वासी पर कोई तरीका थोपा गया है।

5.बपतिस्मा का अर्थ न सिखाता और न ही निर्धारित करता है कि किसी को किस तरीके से बपतिस्मा प्रदान किया जाना चाहिए।

(1) मरकुस 10:38-39।

यीशु ने कहा,"जो कटोरा मैं पीने पर हूँ क्या तुम पी सकते हो या क्या जिस बपतिस्मा को मैं लेने पर हूँ तुम ले सकते हो (Greek: dunasthe ... tobaptisma ho egó baptizomai baptisthénai)?" "तुम जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, उसे लोगे।"

यीशु मसीह और उसके चेलों का बपतिस्मा उनके पवित्र आत्मा के बपतिस्में और पानी के बपतिस्में की ओर संकेत नहीं करता, वरन वह उनके जीवन में होने वाली कठिनाईयों और दुखों की बहुतायत को दर्शाता है। फिर भी,यीशु मसीह और उसके चेले इन कठिनाईयों और कष्टों में डूब नहीं गये थे लेकिन वे कठिनाईयां उन पर आ रहीं थीं। (2 तीमुथीयुस 3:12)।

(2) 1 कुरिन्थियों 12:13

क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो क्या यूनानी, क्या दास हो क्या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए (Greek: pantes eis hen sóma ebaptisthémen) बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।

आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ है: एक ही आत्मा में से पीना या एक ही आत्मा से भर देना। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि बपतिस्मा लेने के लिए कोई पानी पी ले।

(3) गलातियों 3:26-27

"और तुम में से जितनों ने मसीह (Greek: eis Christon ebaptisthéte) का बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। आत्मा का बपतिस्मा लेने का अर्थ है: मसीह को पहिन लेना। लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि जब कोई बपतिस्मा ले और एक चादर को ओढ़ ले। बपतिस्मा की चादर को ओढ़ना मना नहीं है लेकिन उसे ओढ़ने की न शिक्षा दी गयी, न आज्ञा और न ही सुझाव दिया गया है।

(4) कुलुस्सियों 2:11-12।

उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जिससे शारीरिक देह उतार दी जाती है.....और उसी के साथ बपतिस्मा (Greek: suntafentes autó en tó baptismó) में गाड़े गये और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया उसके साथ जी उठे।

आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ है: आत्मिक खतना होना। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि पानी का बपतिस्मा देने के लिए किसी व्यक्ति का खतना किया जाए।

(5) रोमियों 6:3।

"क्या तुम नहीं जानते हो कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?" (Greek: Hosoi ebaptisthémen eis Christon Iésoun, eis ton thanaton autou abaptisthémen).

आत्मा में बपतिस्मा लेने का अर्थ मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जाना है। मगर इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि पानी से बपतिस्मा देने के तरीके के तौर पर किसी व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ा दिया जाए।

(6) रोमियों 6:5

"क्योंकि यदि ह उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।" आत्मा में बपतिस्मा प्राप्त करने का अर्थ: मसीह की मृत्यु की समानता में जुट जाना है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हम पानी का बपतिस्मा देने के तरीके के तौर पर यह घोषित कर दें कि बपतिस्मा पाने के लिए व्यक्ति का मरना जरूरी होगा।

(7) रोमियों 6:6

सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे (Greek: sunetafémen oun autó dia tou baptismatos eis ton thanaton) हुओं में से जिलाया गया,वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ : मरना और मसीह के साथ गाड़े जाना और उसके साथ फिर से जी उठना है। लेकिन इस मामले में भी इसका अर्थ नहीं है कि हम व्यक्ति को ज़मीन में गाड़ने या व्यक्ति को पानी में *डुबोने* को पानी से बपतिस्मा देने का एक तरीका बना दें।

निष्कर्ष: बाइबल में किसी को बपतिस्मा देने के तरीके के बारे में न शिक्षा, न आदेश और न ही वर्णन किया गया है।

6.बाइबल में पानी का बपतिस्मा दिया जाना पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के बपतिस्में का प्रतीक है।

(1) 1पतरस 3:20-21।

क्या हुआ? उस समय में बाढ़ के पानी ने एक ही बार में सारे पापी लोगों को *खत्म* कर दिया,लेकिन नूह और उसके परिवार का *बचाव* किया गया। अत: पानी देखा जाए तो *विनाश* का और साथ ही साथ *उद्धार* का चिन्ह है(अर्थात विश्वासियों की मृत्यु और उसका पुनरूत्थान है)। बाढ़ के पानी ने संसार के पापों को हर एक प्रकार की भ्रष्टता और दोष से को साफ कर दिया (उत्पत्ति 6:5-7),लेकिन दूसरी ओर उसी पानी ने 8 लोगों को बचा लिया(इब्रानियों 11:7)। बाढ़ के पानी ने नूह और उसके परिवार को छुआ तक नहीं,वरन उसी पानी ने नूह और उसके परिवार को बचाया। पानी से बपतिस्मा का प्रतीक *उनके लिए पानी में डूबना* नहीं था, वरन बाढ़ के पानी पर तैरना था जबकि *स्वर्ग से उन पर बरसात हुई* थी(उत्पत्ति 7:11-12)।

इसका क्या अर्थ है? पुराने नियम में पानी, नये नियम में पानी के बपतिस्में का एक प्रतीक (वास्तव में विपरीत प्रतीक)बन गया(पद 21)। बाढ़ मसीही बपतिस्मा की एक *सकारात्मक तस्वीर थी या विपरीत तस्वीर*(अर्थात क्या व बाढ़ एक सकारात्मक तस्वीर को प्रस्तुत करती है या नकारात्मक तस्वीर)। आत्मा में बपतिस्मा विश्वासी को मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान में एक साथ जोड़ता और पाप की गन्दगी,शक्ति और उसके परिणाम से बचाता है। पानी का बपतिस्मा जो आत्मा में बपतिस्मा का प्रतीक है, न केवल पुराने मनुष्यत्व या स्वभाव के *नाश* और नये स्वभाव के *उद्धार* का प्रतीक ही नहीं है,परन्तु यह परमेश्वर से एक अच्छा विवेक प्रदान करने का निवेदन(प्रार्थना) भी है। या यह एक "प्रतिज्ञा या मन्नत (एक गवाही)" है जो विश्वासियों के द्वारा अच्छे विवेक के साथ की जाती है।

(2) 1 कुरिन्थियों 10:1-2

क्या हुआ? पुराने नियम में परमेश्वर के सभी लोग बादल के नीचे रहा करते थे,लेकिन उन पर कभी भी बादल का पानी नहीं गिरा था। उन्होंने लाल समुद्र पार किया लेकिन पानी बिना उन्हें दबाएं या नुकसान पहुँचाए हुए उनके दोनों और दीवार के रूप में खड़ा रहा, और इस्राएलियों ने सूखे सूखे में लाल समुद्र को पार कर लिया(निर्गमन 14: 22)। पानी चाहे बादल में हो या फिर समुन्द्र में पानी ने इस्राएलियों को बिल्कुल नहीं छुआ। उनका प्रतीकात्मक बपतिस्मा बादल या समुन्द्र *के पानी में डूबकर*

बपतिस्मा लेना नहीं था *वरन उस पानी से था जो उनके ऊपर बादल में टंगा था।* अत: उन्होंने मूसा का बपतिस्मा बादल और समुन्द्र में पाया(पद 2)।

इसका क्या मतलब है? अत: जिस प्रतीक का यहां पर इस्तेमाल किया गया वह बादल के रूप में आसमान पर टंगा हुआ जल था, जो इस बात का चिन्ह व प्रमाण था कि इस्राएलियों और *मूसा के बीच अच्छा सम्बन्ध स्थापित हो गया है,* जिसके कारण वे मूसा की व्यवस्था व मूसा के समाज के भागीदार हो गये, जिसे "कलीसिया" के नाम से भी जाना जाता है(ग्रीक :इकलीसिया)(न्यायियों 20:2;भजन 107: 32)। इसकी तुलना मत्ती 28:19 के आधार पर "त्रीएक परमेश्वर के बपतिस्में के साथ करें" जिसमें मसीहियों को नये नियम में परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र तथा परमेश्वर पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में जोड़ा जाता है, जिसे भी "कलीसिया" (ग्रीक : इकलीसिया)(1कुरिन्थियों 12:13) कहा जाता है।

7. बाइबल में पानी का बपतिस्मा पुराने नियम के पवित्रिकरण के अनुष्ठान से जुड़ा हुआ है।

पुराने नियम में पवित्रिकरण अनुष्ठान या स्नान "बपतिस्मा" या "जल संस्कार" कहे जाते थे(ग्रीक: बैपतिटस्मोई)(इब्रानियों 6:2; इब्रानियों 9:10)। दृष्टिगोचर पवित्रिकरण अनुष्ठान व्यक्ति व वस्तुओं के शुद्धिकरण को दर्शाता है और भविष्य में पवित्रिकरण की ज़रूरत की ओर संकेत करता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु और उसके चेलों का पानी का बपतिस्मा आपस में पुराने नियम के इस पवित्रिकरण के अनुष्ठान से जुड़ा हुआ था(यूहन्ना 3:22-26)। दोनों ही "पापों से पवित्रिकरण" को दर्शाते हैं: अर्थात पापों की क्षमा(प्रेरितों 2:28) या पापों के धोये जाने को दर्शाता है।

(1) लैव्यव्यवस्था 4:1-5:13

पुराने नियम की धार्मिक अनुष्ठान या समारोह की व्यवस्था का एक भाग पापबलि था जिसे पापों के प्रायश्चित के लिए लाया जाता था। पाप बलि को लहू सात बार पर्दे के सामने छिड़कने(Greek: prosranó), कुछ लहू को धूप वेदी के खम्बों पर लगाने (Greek: epitithémi) तथा बाकि के लहू को वेदी की तले में डालने (Greek: ekcheó) से प्रतीकात्मक तौर पर सारे पाप धुल जाते थे।

(2) लैव्यव्यवस्था 14:1-9।

पुराने नियम में कोढ़ से शुद्ध ठहराये जाने की व्यवस्था के अनुसार कोढ़ को लहू और जल के मिश्रण (Greek: periraínó) से धोया जाए और उसे धोने के लिए *उस पर ऊपर से पानी बार-बार डाला जाए*(Greek: luomai)। शब्द "बेथ" (Greek: luomai) का अर्थ ऊपर से डाले गये पानी से अपने आप को धोना हैं । इसलिए लैव्यव्यवस्था 14:9 में पायी जाने वाली व्यवस्था के अनुसार वाक्य "पानी से अपने बदन को धोने"(Greek ouomai en hudati) की वाक्य रचना ठीक नये नियम में पाये जाने वाले वाक्य "पानी में बपतिस्मा" के समान ही है। व्यक्ति की अशुद्धता, बीमारी और पापों को धोने के लिए वह व्यक्ति तथा बपतिस्मा देने वाला दोनों पानी में खड़े होते हैं और बपतिस्मा देने वाला उस पर पानी को डालता है Greek:apolouomai (प्रेरितों 22:16)।

(3) लैव्यवस्था 14: 15:11

पुराने नियम में जिसके प्रमहे हो वह जिस किसी को बिना हाथ धोए छूए तो उस व्यक्ति को "उस व्यक्ति को अपने हाथ धोने" और "*जल से स्नान* लेना था" जिसका तरीका बार बार उसके शरीर और उसके हाथों पर ऊपर से पानी डाला जाना था। इसन शब्दों " हाथों में पानी को उण्डेलना" Greek: ep-cheó epi) (2राजा 3:11) और *शरीर को धोने "स्नान या धाने के बाद"*(Greek: louomai), और केवल "उसके पैरों को धोने" (Greek: podas niptó) (यूहन्ना 13:10) की तुलना करें।

क्योंकि जिस बाहरी धार्मिक शुद्धिकरण की मांग मूसा लैव्यव्यवस्था और व्यवस्था विवरण में करता है वह मात्र "एक प्रतिबिम्ब "था(इब्रानियों 10:1) जो हृदय की उस वास्तविक आत्मिक शुद्धि की ओर संकेत कर रहा था जिसकी चर्चा भजनकारों और भविष्यद्वक्ताओं ने अपने लेखों और भजनों में किया है।

(4) 2 राजा 5:10,14।

एलीशा भविष्यद्वक्ता ने नामान कोढ़ी से कहा कि उसे यरदन नहीं में जाकर सात अपने आपको धोना (Hebrew: rachats, Greek: luomai)होगा। यह एक आदेश था। लेकिन नामान हमें कुछ और ही करते हुए प्रतीत होता है: वह यरदन नदी में (नदी में उतरकर) डुबकी लगाने लगा। यह (यहोशू 3:15 का वर्णन है जहां पर उनके पांव नदी के किनारे पानी में डूब गये)एक वर्णन था। यह एक बपतिस्मा या चर्म रोग से शुद्धिकरण की क्रियाविधी थी। यह शारीरिक शुद्धिकरण था।

इसकी तुलना पुराने नियम में लोगों द्वारा अपने पापों का अंगीकार करने और फिर नरदन नदी में लोगों द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा बपतिस्मा लेने से करें जो "उनके पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिए मनफिराव का बपतिस्मा" कहलाता है। (मरकुस 1:4,5,8)। यह पानी का बपतिस्मा आत्मिक शुद्धिकरण का एक प्रतीक था जो लोगों को मसीह के आने के लिए पहले तैयार कर रहा था(मरकुस 1:1-3)। पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा देने के द्वारा मसीह उनके जीवन में आत्मिक शुद्धि करने पर था।

(5) भजन 51:1,2,7

पुराने नियम में पापों को शुद्ध करने का तरीका, जुफा से शुद्ध करके(छीड़कना) धोना था(जैसे कपड़ों को धोया जाता है)। दाऊद परमेश्वर से उसके सारे अपराधों को मिटा डालन(Hebrew: kibbes; Greek: plunó)1, अधर्म को धोने(Hebrew: tiher; Greek: katharizó) 2, और सारे पापों से शुद्ध करने(Hebrew: kibbes; Greek: plunó) के लिए प्रार्थना करता है ताकि वह हिम से अधिक श्वेत हो जाए।(7)

इसकी तुलना लहू को उन वस्तुओं पर छिड़कने के तरीके के इस्तेमाल से तुलना करके देखिये(इब्रानियों 9:19-22)।

इसकी तुलना जल के स्नान से हृदय और विवेक की शुद्धि प्राप्त करने के तरीके से करके देखें।(इब्रानियों 10:22)।

(6) यहेजकेल 36:25-27

पुराने नियम में पापों को शुद्ध करने का तरीका उन पर शुद्ध जल का छिड़का (इब्रानी : ज़राक; ग्रीक: रानो)जाना, उनमें नया हृदय उत्पन्न करना तथा उनमें नयी आत्मा देना, और उनमें निवास करने के लिए परमेश्वर द्वारा अपना आत्मा दिया जाना था। इसकी तुलना नये नियम में बपतिस्मा के अर्थ से कीजिए(प्रेरितों 2:38-39 प्रेरितों 10:43-45)।

(7) मरकुस 7:2-3(ग्रीक भाषा में)

धार्मिक रीति से हाथों को शुद्ध करने का तरीका हाथों को धो लेना था। फरीरियों ने गौर किया कि यीशु के चेलों में से कुछ व्यवस्था के आधार पर अशुद्ध हाथों या बिना धुले हाथों से भोजन करते थे। हाथ धोने की धार्मिक रीति के अनुसार एक हथेली को दूसरी हथेली पर रख कर रगड़ा (Greek: pugmé nipsóntai tas cheiras) जाता था और उनके हाथों पर ऊपर से पानी डाला जाता था(2 राजा 3:11)।

(8) मरकुस 7:4 (ग्रीक भाषा में)

"वे कभी भी बाजार से वापस आने के बाद, वे तब तक खाना नहीं खाते थे जब तक कि वह पूरी विधि हाथ न धो लें(बपतिस्मा)। (ग्रीक : बैपटाईज़ो)। नये नियम में धार्मिक स्नान या शुद्धिकरण को "बपतिस्मा"(ग्रीक:बॅपटाईज़ो)कहा जाता था। और पुराने नियम की शुद्धिकरण प्रक्रिया या धार्मिक रीति से धोने को नये नियम में "बपतिस्मा की रस्म" (ग्रीक: बपतिस्मोई) कहा जाता है!

हाथों को पानी से "बपतिस्मा" देने अर्थात धोने की प्रक्रिया(मरकुस 7:4),इस्राएलियों के बाजार से वापस आने पर शुद्धिकरण का पालन किया करते थे अर्थात प्याले ,घड़ा और केतली धोने की रीति का पालन करते थे। परम्परागत तौर पर "बपतिस्मा" देने तथा हाथ धोने की रीति का वर्णन मरकुस 7:3 और 2 राजा 3:11 में किया गया है।

(9) लूका 11:38 (ग्रीक भाषा में)

"लेकिन फरीसी को यह देखकर अचम्भा हुआ कि उसने भोजन करने से पहले स्नान(baptize) (Greek: baptizó)नहीं किया। "नये नियम में हाथों के शुद्धिकरण को "बपतिस्मा" कहा जाता था! अत: जबकि मत्ती 15:2 और मरकुस 7:2-3 में "हाथों को धोना" Greek: niptó) शब्दों को इस्तेमाल किया गया है वहीं लूका ने हाथों को "बपतिस्मा देने" (Greek: baptizó) जैसे कहावत का इस्तेमाल किया। बपतिस्मा देने की प्रक्रिया को ऊपर से हाथों पर पानी डालकर हाथ धुलाने के द्वारा किया जाता था जबकि हाथ धोने वाला अपनी हथेलियों को आपसे मे रगड़ता था(मरकुस 7:3)!

(10) लूका 11:39 (ग्रीक भाषा में)

पानी द्वारा परम्परागत तौर पर बर्तनों या वस्तुओं के धोये जाने की प्रक्रिया के दौरान बर्तनों को केवल बाहर से छुआ या धोया जाता था अन्दर से नहीं। परम्परागत तौर पर हाथों को धोये जाने की प्रक्रिया की तुलना प्याले या बर्तनों को धोये जाने से की गयी। अत: बपतिस्मा का अथ हाथों, प्यालों या बर्तनों के पानी में डुबोये जाने से नहीं है,वरन इसका तात्पर्य उस जल से हाथों, प्यालों और बर्तनों के धोये जाने से है जो उनके ऊपर उण्डेला जाता है(2 राजा 3:11)।

(11) यूहन्ना 3:3,5,7

यीशु मसीह ने यह शिक्षा दी कि "आत्मा से जन्म पाना एक *ईश्वरीय आज्ञा* है! ये हवाले पवित्र आत्मा से बपतिस्मे के बारे में बताते हैं। "जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्में वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" लेकिन मुख्य बात यह है कि,केवल यीशु मसीह ही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देते हैं,लेकिन मसीहियों को पानी से बपतिस्मा देना चाहिए"(मरकुस 1:8;यूहन्ना 1:33)। जिन बातों के विषय में कहा या कार्य किया जा रहा है(अर्थात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, आत्मा के द्वारा शुद्धि)उसके चिन्ह भी प्रगट होने चाहिए(पानी का बपतिस्मा)। इसीलिए यीशु मसीह ने सिखाया कि"पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में होकर पानी का बपतिस्मा लेना भी एक ईश्वरीय आज्ञा है: मुख्य क्रिया पर आधारित

होकर ही आपको, चेले बनाने चाहिए।"(मत्ती 28:19)। यूहन्ना 3:5 पानी के बपतिस्में का हवाला जो अपने आप में पवित्र आत्मा में बपतिस्मे(नया जन्म) का दृष्टिगोचर चिन्ह व प्रमाण है।

(12) यूहन्ना 3:22-26।

पानी में बपतिस्मा का सम्बन्ध यहूदियों की शुद्धिकरण परम्परा से जुड़ा हुआ है। यीशु मसीह के चेलों (यूहन्ना 4:1-2) और यूहन्ना बपतिस्मा देने वालों ने पानी से बपतिस्मा दिया। इस कारण यूहन्ना के चेलों और यहूदियों के बीच में यहूदी शद्धिकरण परम्परा को लेकर विवाद खड़ा हो गया। इस परम्परा को नवदीक्षित बपतिस्मा कहा गया था। जब कोई गैर-यहूदी जन यहूदी समाज में जुड़ना चाहता है तो वह (अपने ऊपर पानी उण्डेलते हुए) वह एक कसम खाता है, उसका खतना होता है और वह व्यवस्था का पालन करने की प्रतिज्ञा करता है(इब्रानियों 6:2)। बहस का मुद्दा सम्भवत: यह था कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले अपने गुरू अर्थात यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्मा का यदूहियों के बपतिस्मा और यीशु मसीह के चेलों द्वारा दिये जाने वाले बपतिस्मा की तुलना में अधिक सार्थक बपतिस्मा मानते थे। लेकिन उनकी यह समझ में नहीं आ रहा था फिर भी लोग ज्यादा मात्रा में यीशु से बपतिस्मा लेने के लिए क्यों जा रहे हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु द्वारा दिया जाने वाला पानी का बपतिस्मा(ग्रीक: बैपटाइज़ो)(यूहन्ना 3:23,26) यहूदियों की परम्परा से जुड़ा हुआ था (यूहन्ना 3:25)।

(13) यूहन्ना 13:5,9,10

परम्परागत तौर पर पैरों को धोने का तरीका पानी डालकर पैरों को धोना था। पूर्व में यह परम्परा थी कि कोई भी जन रात्रि भोजन से पूर्व अपने पहले जन को ऊपर से उण्डेल कर स्नान किया करता था। लेकिन भोजन करने के स्थान में आने के लिए,उसे केवल अपने धूल भरे पैरों को ही साफ करने की ज़रूरत थी। यूहन्ना 10 में चेलों के पैर उन गद्दियों से नीचे लटके हुए थे जिन पर उन्होंने सहारा ले रखा था। यीशु ने उनके पैरों पर पानी डालते हुए उनके पैरों को धोया(यूहन्ना 13:5)। इस स्थान पर यीशु की बातों का एक आत्मिक अर्थ है: अर्थात एक व्यक्ति केवल एक ही बार नया जन्म पाता हैं। उसके बाद उसे केवल अपने पापों से लगातार शुद्धिकरण प्राप्त करने या उनका अंगीकार करने की ज़रूरत है(यूहन्ना 13:5)। उसके मनपरिर्वतन और नये जन्म के बाद विश्वासी को केवल पापों से दूर रहने की ज़रूरत है। एक ही बार पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने तथा पानी के बपतिस्में द्वारा उसकी पुष्टि करने के बाद, केवल लगातार अपने पापों का अंगीकार करने की ही ज़रूरत थी(1 यूहन्ना 1:9)।

(14) प्रेरितों 22:16।

पुराने नियम में शुद्धिकरण की धार्मिक रीति जिसका अर्थ पापों को दूर करना था नये नियम में पानी का बपतिस्मा देने की एक परम्परा बन गयी। "अब क्यों देर करता है? उठ बपतिस्मा ले(ग्रीक: बैपटाईज़ो)(आदेश,सामान्य भूलकाल, हस्तक्षेप) और उसका नाम लेकर(व्यवहारिक,सिद्ध काल, हस्तक्षेप) अपने पापों (ग्रीक : अपोल्यमाई)को धो डाल!(प्रेरितों 22:16)। यह पौलुस द्वारा पानी के बपतिस्मे के लिए दिया गया आदेश है(प्रेरितों 9:17-18)जो उसने दमिश्क के सीधी सड़क पर रहने वाले यहूदा के घर पर दिया।

(15) इब्रानियों 10:19-22(ग्रीक भाषा में)

"तो आओं हम, सच्चे मन और विश्वास के साथ विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर(Greek: rantizó (सिद्ध,निष्क्रिय) ओर देह को शुद्ध जल से धुलवाकर (Greek: rantizó (सिद्ध,निष्क्रिय)परमेश्वर के समीप जाएं।(इब्रानियों 10:22)।

पुराने नियम में पवित्रिकरण क्रिया या अनुष्ठान, नये नियम में दिये जाने वाले पवित्र आत्मा और पानी के बपतिस्में का ही प्रतिरूप है। नये नियम में यीशु मसीह हमार महायाजक है जो क्रूस पर अपनी ही मृत्यु (अपने ही लहू से)के द्वारा हमें धोता और शुद्ध करता है (इब्रानियों 9:14)। हृदय पर किया जाने वाला छिड़काव हमारे दोषी विवेक को शुद्ध करता(इब्रानियों 10:22)जो हमारी आन्तरिक आत्मिक शुद्धिकरण, पापों के धोये जाने को(धर्मी ठहराये जाने)और आत्मा में बपतिस्मा(नया जन्म)(यहेजकेल 36:25-27;प्रेरितों 2:3-4)को दर्शाता है। देह का धोया जाना (ग्रीक: लोऊमाई)(पानी को देह के ऊपर से बार बार डालना)(परमेश्वर के पास जाने का प्रयास करने से पहले अपनी गन्द को साफ कर लेना)(लैव्यव्यवस्था 16:4) पानी के बपतिस्मे द्वारा बाहरी शुद्धिकरण को दर्शाता है। पानी का बपतिस्मा पवित्र आत्मा के बपतिस्में का प्रत्यक्ष चिन्ह व प्रमाण है।

निष्कर्ष। विधिवत तरीके से बपतिस्मा हाथों,पैरों या पूरे शरीर पर (Hebrew: jatsaq al; Greek: ekcheó epi) (cf. 2 Kings 3:11पानी उण्डेले जाने या छिड़काव करने से होता है। बर्तनों को बपतिस्मा दिये जाने के प्रक्रिया या तो छिड़काव या फिर बर्तनों पर पानी उण्डेलने के द्वारा पूरी होती है,लेकिन परम्परागत तरीके से बर्तन का केवल बाहरी हिस्सा ही धुल पाता था न कि भीतरी। लेकिन आत्मिक जगत में यह बहुत महत्वपूर्ण है कि शुद्धिकरण का कार्य भीतरी भी हो(लूका 11:38-39)

8.नये नियम में पानी का बपतिस्मा पानी को व्यक्ति पर बार बार उण्डेले जाने के द्वारा दिया जाता है।

पानी का बपतिस्मा जिसकी योजना परमेश्वर ने बनायी थी(मत्ती 28:19)पवित्र आत्मा के बपतिस्में का प्रत्यक्ष प्रमाण और चिन्ह है(प्रेरितों 10:44-47; प्रेरितों 11:15-17)।

और बाइबल में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल एक ही तरीके से प्रदर्शित किया गया है:

- पवित्र आत्मा उनके ऊपर स्वर्ग से उण्डेला गया था(योएल 2:28;प्रेरितों 2:17,33; प्रेरितो 10:45)
- पवित्र आत्मा लोगों पर ऊपर से या स्वर्ग से उतरा(प्रेरितों8:16;10:44; प्रेरितों 11:15-16)
- पवित्र आत्मा से पूर्ण वरदान परमेश्वर से (ऊपर से) ग्रहण किया जाता था(ग्रीक:लाम्बानोमाई)(प्रेरितों 2:38-39;5:32;8:15-17;11:17;15:8;19:2; गलातियों 3:2)।

निष्कर्ष। क्योंकि पानी का बपतिस्मा आत्मा के बपतिस्मा का एक दृष्टिगोचर चिन्ह और प्रमाण है, इस कारण पानी के बपतिस्में को नये विश्वासी पर ऊपर से पानी को उण्डेलने के द्वारा दिया जाना सबसे बेहतर तरीका है। स्पष्ट तौर पर यही वह तरीका था जिसके द्वारा नये नियम में पौलुस को बपतिस्मा दिया जाता था(प्रेरितों 22:16)।

9.नदी या किसी घर में बपतिस्मा देना।

(1) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने लोगों को नरदन नदी में पानी से बपतिस्मा दिया।

यूहन्ना बपतिस्मा निर्जल प्रदेश में (स्थान में, पर, नज़दीक)बपतिस्मा देने के लिए आया। वहां पर उसने लोगों को यरदन नदी में पानी का बपतिस्मा दिया(अर्थात जिस तरीके से वह बपतिस्मा दिया करता था)(मरकुस 1:4-5,8)। दोनों की मामलों में शब्द "में" का इस्तेमाल रेगिस्तान की रेत में या यरदन नदी के पानी में डुबोने के लिए नहीं किया गया है, परन्तु यह उस स्थान के बारे में संकेत करता है जहां बपतिस्मा दिया जाता है। बाइबल पानी के बपतिस्में का कोई विस्तृत विवरण नहीं प्रदान करती है। जो लोग नदी के किनारे खड़े थे वे सम्भवत: इतने पानी में घुस गये जितने में कम से कम उनके पैर डूब जाएं। जब वे वहां आकर खड़े हुए तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने आकर उन पर ऊपर से पानी डालते हुए उन्हें बपतिस्मा दिया। यीशु मसीह को भी यरदन नदी में ही बपतिस्मा दिया गया। उसके बपतिस्में के बाद "वह पानी से बाहर आया(मरकुस 1:9-10)। यह वाक्य उस जगह की ओर संकेत करता है जहां पर यीशु को बपतिस्मा दिया गया था, न की उस तरीके की ओर जिसके द्वारा यीशु को बपतिस्मा दिया गया था। ऐसा नहीं था कि वह पानी में डूबा हुआ था और बाहर निकल आया हो, वरन वह नदी से बाहर निकल आया। जिस प्रकार से उसने आत्मा में गोता या डुबकी नहीं लगायी थी ठीक उसी तरह से उसने पानी में डुबकी नहीं लगाई थी, क्योंकि पवित्र आत्मा उस पर कबूतर के रूप में स्वर्ग से उतरकर उस पर ठहर गया था(मरकुस 1:10)।

(2) प्रचारक फिलिप्पुस ने खोजे को उस स्थान पर पानी का बपतिस्मा दिया जहां पर बहुत कम मात्रा में बपतिस्मा दिया।

ग्रीक भाषा का अनुवाद दर्शाता है कि उस स्थान पर कुछ ही पानी था(ग्रीक:epi ti hudór)(पद 36)। जैसा कि ऊपर बताया गया, फिलिप्पुस और खोजे दोनो नदी के किनारे से पानी में उतरे और वहां पर फिलिप्पुस ने उस खोजे को बपतिस्मा दिया। यह बपतिस्मा भी डुबकी का बपतिस्मा नहीं था, क्योंकि ऐसा करने के लिए फिलिप्पुस को पानी के तह तक जाने के लिए खोजे के साथ पानी की गहराई में उतरना पड़ता। लेकिन आगे लिखी बातों को इस तरीके से नहीं समझा जा सकता। लेकिन वे गहने पानी में नहीं उतरे, वे दोनों जाकर थोड़े ही पानी में उतरे और फिलिप्पुस ने उसे पानी पानी से बपतिस्मा दिया। उसे किस तरीके से बपतिस्मा दिया गया था,स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है(अर्थात पानी छिड़क कर या उस पर उण्डेल कर)। बपतिस्मा देने के बाद वे दोनों नदी से बाहर निकल आये(प्रेरितों 8:38-39)।

(3) प्रेरितों ने यरूशलेम में लगभग तीन हज़ार लोगों को पानी का बपतिस्मा दिया।

एक ही दिन में लगभग तीन हज़ार नये विश्वासियों को यरूशलेम में बपतिस्मा दिया गया(प्रेरितों 2:41)। लेकिन क्या यरूशलेम में तीन हज़ार लोगों को एक साथ बपतिस्मा देने लायक पानी उपलब्ध था? यकीनन यह काम बेहतसदा या शिलोम के कुण्ड में सम्भव था। लेकिन, एक भी जगह ऐसा कोई हवाला या संकेत नहीं दिया गया है कि प्रेरित पुराने नियम में ठहराई गयी शुद्धिकरण की रीति से अर्थात छिड़काव या पानी को उण्डेल कर शुद्ध करने की रीति से बिल्कुल भटके नहीं थे।

(4) शिष्य हनन्याह ने पॉलुस को घर में खड़ा करके पानी का बपतिस्मा दिया।

पौलुस को घर में ही बपतिस्मा दिया गया था। पौलुस को निश्चय ही पानी में डुबकी का बपतिस्मा दिया गया था, क्या बपतिस्मा लेते समय वह खड़ा था। पानी को उसके ऊपर छिड़का या उण्डेला गया था। उसके बपतिस्में ने यह प्रगट किया कि उसके सारे पाप धुल चुके (Greek: apolouomai) हैं, अर्थात वह परमेश्वर की निगाहों में पूरी तरह से धर्मी ठहर चुका है।

(5) रोम में एक तस्वीर में पानी के बपतिस्में का दर्शाया गया है(पुरातत्वीय प्रमाण)।

रोम के समाधिक्षेत्र में एक दिवार पर लगी तस्वीर(100-200 ई.प.)है। जिसमे दिखाया गया है कि दो लोग पानी में खड़े हैं और उनमें से एक दूसरे के ऊपर पानी डाल रहा है।

10. पानी से बपतिस्मा दिये जाने के तरीके के सन्दर्भ में निष्कर्ष।

पुराने नियम में परमेश्वर ने ठहराया था कि किसी व्यक्ति के पापों को धोने के अनुसार उस व्यक्ति पर पानी का छिड़काव किया जाए या उस व्यक्ति पर पानी उण्डेला जाएं। इसी प्रकार से मसीही लोगों को भी किसी व्यक्ति के पापों को धोने के लिए ठीक उसी तस्वीर अर्थात व्यक्ति पर पानी छिड़कने या उस पर बार बार ऊपर से डालने या उण्डेलने के तरीके का इस्तेमाल करना चाहिए।

नये नियम में मसीह नये विश्वासियों को उन पर पवित्र आत्मा उण्डेल कर(Greek: ekcheó),पवित्र आत्मा को उन पर उतरने की अनुमति देकर या पवित्र आत्मा को समावेशित किये हुए वरदान देकर पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देता है।

ऐसे लोग "परमेश्वर से जन्मे हुए" है (Greek: ek theou) (यूहन्ना 1:13;स्वर्ग से जन्में अर्थात नया जन्म पाए हुए)(यूहन्ना 3:3,7) या "आत्मा से जन्में"(Greek: ek pneumatos) (यूहन्ना 3:5;8)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और हनन्याह वरन नये नियम के अन्य मसीहियों ने भी नये विश्वासियों पर पानी उण्डेले या छिड़कने के द्वारा पवित्र आत्मा के बपतिस्में को दर्शाने का प्रयास किया!

मसीहियों को मसीह द्वारा पवित्र आत्मा बा बपतिस्मा देने और मसीहियों द्वारा पानी का बपतिस्मा देने के बारे में शिक्षा देनी चाहिए। लेकिन बाइबल में जल द्वारा बपतिस्मा देने के तरीके को स्पष्ट तौर से नहीं बताया गया है, ठहराया नहीं गया, मना नहीं किया गया इस कारण हर एक जन विश्वासी यह प्रगट करते हुए कि उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लिया है और उनके पाप धुल चुके हैं, उसको सहज लगने वाले तरीके से पानी के बपतिस्में को ले सकता है।

बाइबल में पानी के बपतिस्में का अर्थ स्पष्ट रूप से बताया गया है जो कि बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन किसी भी एक तरीके से पानी के बपतिस्मा देने की न शिक्षा दी गयी, न वर्णन किया गया है न अनिवार्य ठहराया गया है और न ही निषेधित किया गया है।

- कई नये मसीहियो ने चुना कि उन्हें पानी से छिड़काव का बपतिस्मा दिया जाए (यहेजकेल 36:25; इब्रानियों 9:13,21;10:22) (प्रेरितों 2:3)।
- अन्य नये मसीहियों ने चुना कि उन पर पानी उण्डेलने के द्वारा पानी का बपतिस्मा दिया जाना चाहिए(मरकुस 1:4-8;प्रेरितों 22:16; इब्रानियों 10:22) (प्रेरितों 2:17,33)।
- हालांकि 'बपतिस्मा देने के लिए' मूल ग्रीक शब्द (ग्रीक: बैपटाईज़ो)का अर्थ कोढ़ से शुद्धि पाने के लिए 'डुबकि लगाना' भी हो सकता है(2राजा 5:14),लेकिन इस सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए किसी नये विश्वासी को बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता, क्योंकि नये नियम में "बैपटाईजों" शब्द का इस्तेमाल रीति या प्रतिकात्मक रूप में किया गया है।[2] नये विश्वासी को पानी में डुबकी द्वारा बपतिस्मा देने के बारे में न तो सिखाया गया है,न वर्णन किया गया और न ही बाइबल में अनिवार्य ठहराया गया है। वरन सच कहा जाये तो इसे बाइबल में दर्शाया तक नहीं गया है!

लेकिन क्योंकि बाइबल में डुबकी के बपतिस्में की बाइबल में मनाही नहीं की गयी है इस कारण मसीह विश्वासी चाहें तो पानी में डुबकी का बपतिस्मा भी ले सकते हैं। कई नये विश्वासी पानी में डुबकी का बपतिस्मा इसलिए लेते हैं क्योंकि हमारे पुराने मनुष्य की मृत्यु और नये मनुष्यत्व के जीवित होने को दिखाता है। लेकिन, एक तरफ जहां "डुबकी का बपतिस्मा" ज़ोर देता है कि मनुष्य के साथ क्या होता है(अर्थात बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति के साथ)(प्रतिकात्मक रूप में वह संसार के लिए मर जाता और मसीह में पुन: जीवित हो जाता है),तो दूसरी तरक "पानी के उण्डेलना" और"छिड़कना" ज़ोर देता है कि परमेश्वर क्या करता है(परमेश्वर, पवित्र आत्मा, परमेश्वर के पास से उतरकर, विश्वासी के जीवन को भर देता और ढांप देता है)।

फिर भी, रोमियों अध्याय 6 पानी से बपतिस्मा देने के तरीके के बारे में शिक्षा नहीं देता, वरन आत्मा के द्वारा बपतिस्मा देने अर्थ के बारे में बताता है। रोमियों 6 में डुबकी के बपतिस्में के विचार पर पॉलुस ने चर्चा की ही नहीं है।

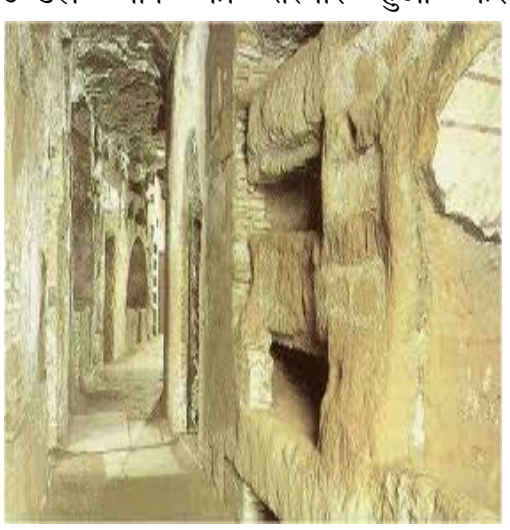
एक सम्भव तरीका यह है कि विश्वासी को पवित्र आत्मा के बपतिस्में और पानी के बपतिस्में कि शिक्षा दे दी जाये और उसके बाद चुनाव करना उस पर छोड़ दिया जाये कि उसके लिए पानी से बपतिस्मा लेने का कौन सा

दृष्टिगोचर तरीका अधिक सार्थक है। मसीहियों को मसीही बपतिस्में को लेकर आपस में झगड़ना नहीं चाहिए, वरन उन्हें आत्मा में एकता बनाये रखनी चाहिए, जिसमें "एक बपतिस्में" पर विश्वास करना शामिल है(इफिसियों 4:3-6)।

च. प्रारम्भिक मसीहियों में बपतिस्में की तस्वीरें।

मसीहियों से जुड़े पौराणिक कब्रिस्तानों व अवशेषों में बहुत से विषयों पर चित्र मिल जाते हैं और उनमें से अधिकतर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तस्वीर मिलती है जिसमें वह यीशु के ऊपर पानी उण्डेल रहे होते हैं। पौराणिक चिन्हों के एक मार्गदर्शक के अनुसार, "यूहन्ना को हमेशा एक शंख से यीशु पर पानी उण्डेलते हुए दिखाया गया है, जिसके कारण शंख बपतिस्में का एक सामान्य प्रतीक बन गया है।" यदि बपतिस्मा किसी नदी में दिया जा रहा है तो, बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति पानी में खड़ा होगा और बपतिस्मा देने वाला उसके सिर पर पानी को कप या शंख से उसके सिर पर उण्डेलेगा।

पुराने ज़माने में ज़्यादातर मसीही कलाकारी: पौराणिक काल में पच्चीकारी का काम, कब्रगाहों में चित्रकारी, घरेलू सामानों पर जैसे कि प्याले, चम्मच और संगमरमर के पत्थरों पर, हमेशा किसी कप या शंख के द्वारा बपतिस्मा पानी वाले व्यक्ति पर पानी उण्डेले जाने की तस्वीर हुआ करती थी। बपतिस्मा देने वाला स्वयं बपतिस्में के गवाह हुआ करता था।



कब्रस्तानों व कलीसियाओं से मिली बपतिस्में की तस्वीरें






















छ. कौन पानी से बपतिस्मा दे सकता है

मसीही लोग कभी बाइबल में लिखी बातों से आगे नहीं जा सकते। (1कुरिन्थियों 4:6)

1. <u>बाइबल की भविष्यद्वाणी</u> (मरकुस 1:8)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने भविष्यद्वाणी की थी कि यीशु मसीह लोगों को आत्मा से बपतिस्मा देगा(प्रेरितों 11:16)। मनुष्य में किसी को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने की काबलियत नहीं है, यह काम केवल सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर अपने अनुग्रह से लोगों के लिए करता है। पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने का अर्थ है कि परमेश्वर ने अपनी आत्मा के द्वारा मनुष्य को उद्धार देने की पहल कर दी है। इसका अर्थ है कि यह व्यक्ति सच में उद्धार पा चुका है।

अत: कोई नया विश्वासी अपने आप को बपतिस्मा नहीं देता है,परन्तु कोई दूसरा विश्वासी या मसीही उसे बपतिस्मा देता है। दूसरे व्यक्ति द्वारा पानी का बपतिस्मा दिया जाना इस बात को दर्शाता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर का अनुग्रह है।

2. <u>बाइबल का इतिहास</u> (यूहन्ना 3:22,26;यूहन्ना 4:1-2)

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने लोगों को यरदन नदी में पानी का बपतिस्मा दिया। यीशु के चेले भी यहूदा के किसी क्षेत्र में लोगों को बपतिस्मा दिया करते थे। यीशु ने अपने आप किसी को कभी पानी का बपतिस्मा नहीं दिया।

बाइबल इस बारे में कोई विस्तृत उल्लेख प्रस्तुत नहीं करती है कि कलीसिया के प्रथम दिन में ही तीन हज़ार नये विश्वासियों को किसने बपतिस्मा दिया। बाइबल इस बात का भी जिक्र नहीं करती है कि उन्हें किस स्थान या किस तरीके से बपतिस्मा दिया गया था(प्रेरितों 2:38-41)। यदि पानी द्वारा बपतिस्मा लिया जाना वास्तव में अति महत्वपूर्ण होता तो निश्चय ही लूका उसका उल्लेख न करने की चूक नहीं कर सकता था। जब चेलों की संख्या बढ़कर पांच हज़ार तक पहुंच गयी,तब भी पानी के बपतिस्में का जिक्र नहीं किया गया(प्रेरितों 4:4),हालांकि सम्भवत: लोगों ने बपतिस्मा लिया होगा(मत्ती 28:19)! इसके अलावा जब बहुत से लोग कलीसिया में आकर मिलने लगे और बहुत से पुजारी भी विश्वास करने लगे,तब भी पानी से बपतिस्मा दिये जाने का कोई जिक्र नहीं किया गया(प्रेरितों 6:7)।

जब प्रचारक (पूर्व डीकन) फिलिप्पुस ने सामारियों को सुसमाचार सुनाया और वे विश्वास करने लगे, तब भी इस बाता का जिक्र नहीं किया गया कि किसने उन्हें, कहां और किस तरीके से बपतिस्मा दिया(प्रेरितों 8:12-13)। बाद में फिलिप्पुस ने कूश देश के खोजा को पानी एक ऐसे स्थान पर जाकर बपतिस्मा दिया जहां पर थोड़ा सा ही पानी थ(प्रेरितों 8:36-39)।
हनन्याह दमिश्क में रहने वाला एक साधारण विश्वासी था। उसने यहूदा के घर में उपलब्ध पानी के द्वारा ही शाऊल को (बाद में जो पॉलुस के नाम से जाना गया) बपतिस्मा दिया(प्रेरितों 9:10-11;प्रेरितों 22:12-16)। प्रेरितों 26:19-23 में पॉलुस के पानी के बपतिस्में का जिक्र तक नहीं किया गया है। जब कुरनेलियुस नामक एक गैर यहूदी (अन्यजाति में से)जन व उसके मित्रों और परिवार जनों ने अपने ही घर में सुसमाचार सुना और पवित्र आत्मा को बपतिस्मा पाया तब प्रेरित पतरस ने उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेने का सुझाव दिया। लेकिन यहां पर भी इस बात का कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं है कि किसने,कहां और कैसे उन्हें बपतिस्मा दिया गया(प्रेरितों 10:47-48)।

हम जानते हैं कि एक व्यापार करने वाली महिला लुदिया और उसके घराने ने पानी का बपतिस्मा लिया था। लेकिन यहां पर भी इस बात का कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं है कि किसने,कहां और कैसे उन्हें बपतिस्मा दिया गया (प्रेरितों 16:13-15)।
फिलिपि में दारोगा और उसके पूरे परिवार ने एक साथ विश्वास करके पानी का बपतिस्मा लिया। लेकिन यहां पर भी इस बात का कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं है कि किसने,कहां और कैसे उन्हें बपतिस्मा दिया गया। उन्होंने सम्भवत: अपने घर के बाहर कहीं बपतिस्मा लिया हो(प्रेरितों 16:31-34)।

जब पॉलूस ने कुरिन्थि में कलीसिया की शुरूआत की तो वहां उसने दो पुरूषों और एक परिवार को बपतिस्मा दिया। मसीह ने उसे बपतिस्मा देने के लिए परन्तु सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा था(1 कुरिन्थियों 1:13-17)।
जब तितुस युस्तुस नाम भक्त के घर में लोग जमा हुए, तो उन्होंने विश्वास किया और पानी का बपतिस्मा लिया। लेकिन यहां पर भी इस बात का कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं है कि किसने,कहां और कैसे उन्हें बपतिस्मा दिया गया(प्रेरितों 18:7-8)।
एलिक्जेन्ड्रिया का रहने वाला एक यहूदी ,अपुल्लोस, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पानी के बपतिस्में के बारे मे जानता था। अक्विल्ला और प्रिस्किल्ला ने उसे अपने पास बुलाकर परमेश्वर के बारे में अधिक स्पष्टता से बताया। इन निर्देशों और शिक्षाओं प्राप्त करने के बाद सम्भवत: उसने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया। लेकिन इस जानकारी के बाद भी उसे दुबारा बपतिस्मा लेने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी (अर्थात, मसीही पानी के बपतिस्मा लेने की)(प्रेरितों 18:24-26)।

प्रेरित पॉलुस की मुलाकात यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारह चेलों से हुई, वे भी *यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्मा* से अवगत थ। यह मन फिराव और पापों की क्षमा का बपतिस्मा था(मरकुस 1:4;प्रेरितों 19:4)। वे पवित्र आत्मा के बारे में कुछ नहीं जानते थे और उन्होंने नया जन्म नहीं पाया था(अर्थात आत्मा का बपतिस्मा)। पौलुस द्वारा उन्हें पवित्र आत्मा के बारे में बताये जाने के बाद,उन्होनें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया(उन्होंने नया जन्म पाया)। उन्होंने दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लिया लेकिन इस बार यीशु के नाम में। लेकिन यहां पर भी इस बात का कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं है कि किसने,कहां और कैसे उन्हें बपतिस्मा दिया(प्रेरितों 19:1-7)

3.बाइबल की आज्ञा (मत्ती 28:19)।

यीशु ने अपने चेलों को यह आज्ञा दी कि वे जाकर सारी जातियों के लोगों को चेला बनाएं, उन्हें बपतिस्मा दें और उन्हें उसकी सारी आज्ञाएं मानना सिखाएं। और उन्होंने उसकी आज्ञाओं का पालन किया। उसकी बारी आने पर उन्होंने भी अपने चेलों को भी यही आज्ञा दी कि वे भी सारी जातियों के लोगों को चेला बनाएं, उन्हें बपतिस्मा दें और उन्हें यीशु की आज्ञाएं मानना सिखाएं। इस तरह से यीशु के सभी चेलों को नये विश्वासियों को पानी का बपतिस्मा देने की आज्ञा दी गयी थी। बहुत सी परम्परागत कलीसियाओं में केवल नियुक्त बिशप या पासबानों को ही बपतिस्मा देने की अनुमति है। लेकिन बाइबल में ऐसा कोई विशेष निर्देश नहीं दिया गया है जिसके तहत बपतिस्मा देने का अधिकार किसी विशेष वर्ग को दिया गया हो।
ई.प. प्रथम शताब्दी में पानी का बपतिस्मा देने के लिए कोई एक सुनिश्चित सिद्धान्त नहीं था। लोगों को यीशु मसीह के नाम में और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में भी बपतिस्मा दिया गया था। उनके बपतिस्मे का अर्थ पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा से भरा जाना था(अर्थात पवित्र आत्मा को पा लेना)।

4. क्या महिलाएं भी बपतिस्मा दे सकती हैं?

मत्ती 28:19 में यीशु ने अपने सारे प्रेरितों को, चाहे वे पुरूष हों या स्त्री, सारी जातियों के लोगों को चेला बनाने, उन्हें बपतिस्मा देने और उन्हें यीशु की शिक्षाओं का पालन करने का आदेश दिया था। लेकिन कई तथ्यों के आधार पर कलीसियाओं ने महिलाओं को यह अनुमति प्रदान नहीं की है:

- बाइबल में एक भी ऐसी घटना नहीं है जहां पर किसी स्त्री ने किसी को भी बपतिस्मा दिया हो।
- बपतिस्मा की सभा या समारोह को एक सार्वजनिक समारोह के तौर पर देखा जाता है। और बाइबल हमें शिक्षा देती है कि स्त्रियों को समाज या कलीसिया में अगुवाई नहीं करनी चाहिए या चुप रहना चाहिए(1कुरिन्थियों 14:33-28; 1 तीमुथीयुस 2:11-15; 2तीमुथीयुस 3:2,4-5)।
- पानी का बपतिस्मा बहुत से मसीहियों के लिए एक संवेदनशील मुद्दा है। पानी से बपतिस्मा दिये जाने का तरीका किसी कमज़ोर भाई या बहन के लिए ठोकर का कारण नहीं बनना चाहिए(रोमियों 14:1 से 15:7)

बाइबल कौन बपतिस्मा दे सकता है, विषय पर कोई शिक्षा और आज्ञा नहीं देती है और न ही इसका विरोध करती है।

ज. कलीसियाई परम्पराओं में बपतिस्मा तथा बच्चों का बपतिस्मा

पढ़ें कि मरकुस 7:1-13 में यीशु मसीह धार्मिक परम्पराओं (कलीसियाई व धर्मविज्ञान से जुड़ी परम्पराओं) के विषय में क्या कहते हैं?

1. ई.प.दूसरी शताब्दी में कलीसिया की परम्पराएं।

ई.प. दूसरी शताब्दी के दौरान इस्टर्न मिस्ट्री धर्मों के प्रभाव में पानी के बपतिस्में को एक अलग मतलब प्रदान कर दिया गया। लोग विश्वास करने लगे कि पानी से बपतिस्मा दिये जाने, अपने आप पानी में और बपतिस्मा दिये जाते समय बोले जाने वाले वाक्यों में एक जादूई रिश्ता हाता है। लेकिन बाइबल हमें बताती है कि बपतिस्मा, खतना के समान, विश्वास से धर्मी ठहराये जाने का एक चिन्ह और एक मुहर है।(रोमियों 4:11; कुलुस्सियों 2:11-12)।

2. ई.प.तीसरी शताब्दी में कलीसिया की परम्पराएं।

ई.प. तीसरी शताब्दी के बाद बपतिस्मा एक सार्वजनिक धार्मिक रीति बन गया जिसमें कई असाधारण चीज़ें शामिल हो गयीं और उसने एक अटल रूप धारण कर लिया था। उसके पानी का बपतिस्मा लेने से पहले, प्रार्थी से शैतान और संसार से रिश्ता तोड़ने और अपने विश्वास का अंगीकार करने के लिए कहा जाता था। उसके बाद उसे पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से तीन बार बपतिस्मा दिया जाता था। इससे उस पर से संसार की गंदगी हट जाती और उसके पाप क्षमा हो जाते थे। बपतिस्मे के बाद में उसे अगुवों के हाथ रखने के द्वारा पवित्र आत्मा मिलता था।

कार्थेज के बिशप साइप्रियान (245-258) के बाद से हाथों का रखना केवल बिशप का एक निजी अधिकार बन गया। इस विशेषाधिकार ने बिशप को सारे नये विश्वासियों और उसके अधिकार के दायरे में आने वाले प्रत्येक मसीहियों का आत्मिक पिता बना दिया।

जबकि बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर को छोड़ और कोई जन नये विश्वासियों का पिता नहीं हो सकता (मत्ती 23:9;यूहन्ना 1:12-13;इफिसियों 3:14)।

बपतिस्मा दिये जाने के समय तरह तरह के प्रतीकात्मक कार्यों को किया जाने लगा: शैतान को निकालने हेतू झाड़ फूंक; नये विश्वासियों के मुंह पर फूंकन;क्रूस का निशान बनाना; और बपतिस्मा लेने वाले को नया नाम देना। नये विश्वासियों को नये जीवन के भोजन के रूप में दूध में मधु मिलाकर दिया जाता था; उन्हें पहिनने के लिए नये श्वेत वस्त दिये जाते थे, उन्हें मण्डली के बीच से होकर गुज़ारा जाता था ताकि मण्डली के लोग उनके लिए प्रार्थना कर सकें; लोग उसे भाई के रूप में चूमते थे,और अन्त में वह प्रभु भोज प्राप्त कर सकता था(यह रोमन कैथलिक में प्रभु भोज देने का तरीका है)। इसी बपतिस्में की तुलना यहूदी नवदीक्षित बपतिस्में से करें।

लेकिन बाइबल में कुछ जी जोड़ने या घटाने के लिए मना किया गया है, क्योंकि वे जल्द ही मनुष्यों की रीति बन जाते हैं और परमेश्वर का वचन प्रभावहीन ठहरता है(प्रकाशितवाक्य 22:18-19;मरकुस 7:1-13)।

3. बच्चों का बपतिस्मा।

(1) बाइबल में शिशुओं का खतना और बपतिस्मा ।

पुराने नियम में परमेश्वर ने अब्राहम से बच्चा पैदा होने के आठ दिन बाद ही परमेश्वर द्वारा बांधी गयी वाचा के चिन्ह के रूप में बच्चे का खतना करने के लिए कहा(उत्पत्ति 17:7-14)। नये नियम के प्रकाशन में विश्वासियों की सन्तान को(प्रेरितों 2:38-39) पवित्र आत्मा का वरदान और उसके घराने को (ग्रीक: ओईकोस)उद्धार देने की प्रतिज्ञा की गयी थी(प्रेरितों 11:14;प्रेरितों 16:31)। यीशु मसीह के प्रेरितों ने भी नये विश्वासियों के सारे घराने को पानी का बपतिस्मा दिया(जिसमें उनके परिवार के लोग व दास, दासियां भी शामिल थे)(ग्रीक:ओईकोस)(प्रेरितों 16:15; प्रेरितों 16:31-34; प्रेरितों 18:7-8;1 कुरिन्थियों 1:16; 16:15)।

अत: इस बात को पूरी तरह से साबित या इनकार नहीं किया जा सकता कि इन घरों में छोटे बच्चे भी थे(यिर्मयाह 1:5)। और यह भी साबित या इनकार नहीं किया जा सकता था कि ये जब उन्हें सुसमाचार सुनाया जाता था तो वे उसे समझ सकते थे(देखें प्रेरितों 2:39-41;प्रेरितों 16:32; 2 तीमुथीयुस 3:15)।

(2) प्रारम्भिक कलीसियाई इतिहास में शिशु का बपतिस्मा।

नये नियम के बाद में कलीसियाई इतिहास काल में शिशु के बपतिस्में के बारे में बताता है। जस्टिन मार्टायर(100:165 ई.प. प्रेरितों का चेला था और वह शिशु को बपतिस्मा देने के बारे में जानता था। फादर लायन के इरनाइउस (**Irenaeus** of Lyon) व Tertullian of Carthage के समय में शिशुओं को सामान्य तौर पर बपतिस्मा दिया जाने लगा। (190-216 ई.प) शिशुओं के बपतिस्मा के तौर तरीकों से पूरी तरह से अवगत था, लेकिन उसने इसके चलन के खिलाफ आवा़ज उठाई, क्योंकि वह मानता था कि पानी का बपतिस्मा दिये जाने के समय पुराने सारे पाप मिट जाते हैं। इस कारण से पानी के बपतिस्मा को जितना देरी तक हो सके रोक दिया जाता था। **Origen** (185-254 ई.प.)ने लिखा कि प्रेरितों के समय में भी कलीसिया में शिशुओं को बपतिस्मा दिया गया था। हालांकि उसके इस ज्ञान या प्रकाशन के स्रोत का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। मिलान (जगह का नाम)के बिशप(374-397 ई.प) बिशप बनने तक भी अपने बपतिस्में को टालता रहा, क्योंकि वह उस अनुग्रह को नहीं खोना चाहता था जो बपतिस्मा पाते समय परमेश्वर से प्राप्त होता है।

प्रारम्भिक कलीसिया में पानी का बपतिस्मा लेते समय साक्षी मौजूद हुआ करते थे। उन्हें प्रार्थी के अच्छे आचरण के बारे में बताना होता था(इस तरह देखा जाए तो प्रार्थी का अव्यस्क होना सम्भव नहीं था)। बाद में वे इस बात की गवाही भी दे सकते थे कि प्रार्थी ने सच में बपतिस्मा लिया है।

प्रारम्भिक कलीसिया ने यह शिक्षा नहीं दी कि परमेश्वर के अनुग्रह की वाचा शिशुओं को बपतिस्मा देने का आधार थी। इसके बजाय शिशुओं का बपतिस्मा एक ऐसा माध्यम बना गया जिससे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हुआ। बच्चों को दोषी और अशुद्ध माना जाता था और उनके पास बपतिस्मा प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं था। बच्चों में कोई व्यक्तिगत विश्वास नहीं था और वे किसी भी तरह से अपने विश्वास का अंगीकार नहीं कर सकते थे। इस कारण अभिभावकों के विश्वास, गवाहों के विश्वास(जिन्हें बाद में गौडफाद या गौडमदर के रूप में जाना जाता था)और कलीसिया के विश्वास ने उस बच्चे के व्यक्तिगत विश्वास का स्थान ले लिया। कलीसिया,गवाह के रूप में खड़ी हुई और बच्चे को पानी को बपतिस्मा लेने के लिए लाया गया, कलीसिया ने ही बच्चे के स्थान पर विश्वास किया और उस बच्चे के स्थान पर विश्वास का अंगीकार किया। बाद मे इन गवाहों ने यह वायदा किया कि वे बच्चे को मसीही विश्वास की शिक्षा प्रदान करेंगें। हालांकि इस प्रकार की किसी शिक्षा को हम बाइबल में नहीं पाते हैं।

(3) शिशु का बपतिस्मा और अगस्टाईन (345-430 ई.प)।

उसने बपतिस्मा लेने में काफी देरी करी। उसके मन में पानी के बपतिस्मा की शिक्षाओं को लेकर बहुत से विचार थे। उसने निम्नलिखित शिक्षा दी: प्रारम्भ में अगस्टीन ने विश्वास किया, वैसे ही कि कलीसिया ने भी किया, कि जीवन भर में किये गये पाप पानी के बपतिस्मे से क्षमा हो गये। लेकिन बाद में उसने बपतिस्मा को पानी से जोड़ा, बीते समय में किये गये पापों को नहीं, वरन मूल पाप के साथ। शिशु का पानी का बपतिस्मा से उसके पाप का दोष दूर हो गया, लेकिन विरासत में मिला पाप का दाग या प्रदूषण(पापमय इच्छाएं)धीरे धीरे ही खत्म होगी और मृत्यु पर जाकर खत्म हो जाएंगी।

अगस्टिन विश्वास करता था कि पाप का एक स्थायी चरित्र होता है:

- कलीसिया के द्वारा पानी का बपतिस्मा पाने वाले जन पर कलीसिया का अधिकार होता है
- कलीसिया को यह अधिकार होता है कि वह बल से भी बपतिस्मा प्राप्त भटके हुए जन को कलीसिया में फिर वापस ला सकती है।
- कलीसिया के बाहर (रोमन कैथलिक)पानी के बपतिस्मे में कोई छुटकारा देने वाला प्रभाव नहीं होता।
- पानी का बपतिस्मा उद्धार के निमित्त एक विषयपरक ज़रूरत थी और विश्वास उद्धार के निमित्त व्यक्तिपरक ज़रूरत थी।
- व्यक्तिगत विश्वास पानी के बपतिस्में के पहले या बाद में वास्तविकता होनी चाहिए।
- शिशु का पानी के बपतिस्मा लेना केवल तभी सार्थक साबित होता है जब वह बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति बाद में बदले और व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करे। जब ऐसा होता है तो उस व्यक्ति को दोबारा पानी का बपतिस्मा लेने की कोई ज़रूरत नहीं होती है। इसके साथ अगस्टिन की शिक्षा खत्म हो जाती है।

लेकिन बाइबल शिक्षा देती है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्में के द्वारा एक व्यक्ति मसीह की देह में बपतिस्मा प्राप्त करता है न कि किसी रोमन कैथलिक कलीसिया या फिर किसी संगठन में(1 कुरिन्थियों 12:12-13)। इसी प्रकार एक मसीही जन केवल यीशु मसीह से जुड़ता है(इफिसियों 1:13-14)! कलीसिया और उसके अगुवों से उन लोगों पर प्रभुता करने से मना किया गया

है जिन्हें परमेश्वर ने उनके हाथों में सौंपा है(1पतरस 5:3)! बाइबल हमें यह भी शिक्षा नहीं देती है कि उद्धार पाने के लिए पानी का बपतिस्मा लेना अनिवार्य है(मरकुस 16:16)!

(4) मेन्ज़ की परिषद के समय में शिशु का बपतिस्मा(813 ई.प)

इस दौरान ऐसा निर्णय लिया गया कि बच्चों के मां बाप उन्हें पानी का बपतिस्मा दिलाने के लिए नहीं ला सकते, क्योंकि बच्चा उनके कारण ही पाप के द्वारा गर्भ में पड़ा और पाप में पैदा हुआ! केवल गवाह(गॉडफादर या गॉडमदर) ही बच्चे को पानी का बपतिस्मा दिलाने के लिए ला सकता था। बच्चों की आत्मिक शिक्षा कलीसिया के द्वारा आत्मिक अभिभावकों के माध्यम से सामान्य शिक्षा व माता पिता से अलग रहकर दी जाती थी।

लेकिन, बाइबल सभी अभिभावकों से परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में बसाने के लिए कहता है, ताकि वह वह परमेश्वर के वचन की छाप अपने बच्चों के मन में छोड़ सकें, ताकि वे हर समय अपने घर में परमेश्वर के वचन पर बातचीत कर सकें जिससे परमेश्वर के वचन को उनके जीवन व उनके घर को निर्धारित करने की अनुमति मिले(व्यवस्थाविवरण 6:4-8)। बाइबल में यह सारे पिताओं के लिए यह आज्ञा है कि वे अपने बच्चों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा दें(इफिसियों 6:4)। और बाइबल लोगों से अनुरोध करती है कि वे बचपन से ही अपने माता पिता, बाइबल और अपने शिक्षकों से सीखें और सिद्ध हो जाएं(2 तीमुथीयुस 1:5; 3:14-17)।

(5) मध्ययुगी दर्शन पद्धति में बच्चों का बपतिस्मा(6 से 16 शताब्दी तक)।

मध्ययुग के विश्वविद्यायलों में(जोर्जी द ग्रेट से लेकर, 590 ई.प. से पुन:स्थापन से लेकर सुधारकाल तक, 1517 ई.प)एरिस्टाटल के धर्मनिरपेक्ष दर्शन को रोमन कैथोलिक चर्च की थिओलौजी अर्थात धार्मिक शिक्षा के साथ मिश्रित कर दिया गया था। उद्धार पाने के लिए विश्वास करने और मन बदलने की व्यक्तिपरक ज़रूरत को पीछे धकेल दिया गया और बपतिस्मा लेने की रीति की विषयपरक जरूरत को कलीसिया के द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिए पर्याप्त ठहरा दिया गया। रोमन कैथलिक कलीसियाओं ने सिखाया कि (शिशुओं)का पानी का बपतिस्मा बच्चे पर परमेश्वर के अनुग्रह की अपरम्पार वर्षा करेगा और उन्हें निम्नलिखित आशीषें प्रदान करेगा: अर्थात धार्मिकता और नया जन्म, उनके सारे मूल पापों और पानी का बपतिस्मा लेने से पहले सारे पापों को क्षमा करेगा, अस्थायी और स्थायी दण्डों को स्थगित कर देगा, और उन्हें सारी आलौकिक आशीषें जैसे विश्वास, आशा, प्रेम और पवित्रता प्रदान करेगा। (शिशुओं का)पानी का बपतिस्मा एक ऐसा द्वार बन गया जिसके द्वारा एक व्यक्ति रोमन कैथोलिक कलीसिया में प्रवेश करता और अनन्त जीवन प्राप्त करता है। रोमन कैथलिक कलीसियाओं में उद्धार प्राप्त करने के लिए (बचपन में ही)पानी का बपतिस्मा लेना अनिवार्य हो गया। थोमन एक्यूनास(1227-1274)ने सिखाया कि बच्चे में जिस भी बात की कमी या घटी है वह उसे रोमन कैथोलिक विश्वास के द्वारा हासिल कर लेगा।

लेकिन, कलीसिया नहीं, केवल यीशु मसीह ही उद्धार व समस्त अन्य आशीषों का मध्यस्थ होगा है(यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 4:12;इफिसियों 1:3)।

(6) सुधारकाल के बाद से शिशुओं का बपतिस्मा(16 शताब्दी)

सुधार के बाद कलीसिया ने(16-17 शताब्दी) रोमन कैथलिक द्वारा स्थापित धारणा को पूरी तरह अस्वीकृत कर दिया जिसके आधार पर पानी का बपतिस्मा लेने से अनुग्रह प्राप्त होता है। उन्होंने शिक्षा दी की परमेश्वर अपनी सर्वश्रेष्ठ इच्छा के आधार पर अनुग्रह प्रदान करता है यह हमारे कामों या धार्मिक रीतियों को पूरा करने के कारण नहीं होता(इफिसियों 2:8-9;तीतुस 3:4-8)।

संशोधित कलीसिया ने इस तथ्य को भी अस्वीकार किया कि हम अनुग्रह को खो सकते है, क्योंकि परमेश्वर अपनी इच्छा में अनुग्रह के द्वारा विश्वास से धर्मी ठहराये गये लोगों की अवश्य महिमा करता है(रोमियों 3:24; रोमियों 8:28-30; फिलिप्पियों 1:6)। संशोधित कलीसिया ने इस तथ्य को भी मानने से इनकार कर दिया कि पानी का बपतिस्मा की शिक्षा बाइबल से अलग एक मत बन चुकी है। क्योंकि मसीही जन बाइबल में लिखी बातों से अलग नहीं जा सकता(यूहन्ना 17:17;1कुरिन्थियों 4:6; 2 तीमुथीयुस 3:16-17)।

झ.पानी का बपतिस्मा लिए जाने का समय

बाइबल ऐसे लोगों के बारे में बताती है जिन्होंने सुसमाचार सुनकर और यीशु मसीह पर विश्वास करने के *बाद* में पानी का बपतिस्ता लिया(प्रेरितों 2:37-39)।

लेकिन बाइबल इसके साथ साथ इस बात का भी हवाला देती है कि दास दासियों समेत पूरे घराने ने सुसमाचार सुना और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया और पानी का बपतिस्मा लिया(प्रेरितों 16:14-15,30-34; 1कुरिन्थियों 1:16)। कई मसीही

मानते हैं कि उन घरों में निश्चय ही कुछ बच्चे ज़रूर होगें और उन्होंने बिना व्यक्तिगत विश्वास में दृढ़ता के ही बपतिस्मा ले लिया था।

1. पानी का बपतिस्मा लेने का उचित समय इस बात पर निर्भर करता है कि मसीही लोग "मन परिवर्तन" को किस तरह से ग्रहण करते हैं।

कई मसीही लोग नये विश्वासियों को पानी का बपतिस्ता देने से पहले उसने कुछ विशेष पूर्वापेक्षाएं रखते हैं। वे विश्वास करते हैं कि "मन परिर्वतन" का अर्थ "दृष्टिगोचर जीवन परिवर्तन" होता है। नया विश्वासी केवल अपने जीवनशैली के कुछ क्षेत्रों में परिवर्तन करने के बाद ही पानी का बपतिस्मा ले सकता। यदि वह अपना जीवन इन क्षेत्रों में परिवर्तित नहीं करता है तो उसे पानी का बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता।

अन्य मसीही कहते है कि बाइबल के इतिहास में नये विश्वासियों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद या मन फिराने तथा विश्वास करने के बाद(प्रेरितों 2:38),तुरन्त पानी का बपतिस्मा लिया था(प्रेरितों 10:47-18)। उनका पानी में बपतिस्मा लेना इस बात का स्पष्ट चिन्ह व मुहर है कि यीशु मसीह ने उनके लिए क्या किया है, न कि उन्होंने पहले यीशु के लिए क्या किया है। यीशु मसीह ने उन्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया है(अर्थात उन्हें नया जन्म दिया है)। उसने उन्हें सत्य को सुनने का अवसर दिया जिसने उनके विचार और मत को बदल दिया । "मन फिराव" (ग्रीक:मेटानोईया) शब्द का अर्थ परमेश्वर या यीशु मसीह की पहिचान और उसके द्वारा आपके लिए किये गये कामों को लेकर "आपके विचारों को बदलना"! अत: जब कोई व्यक्ति यह अंगीकार करे कि वह यीशु मसीह पर विश्वास करता है,उसे बपतिस्मा दिया जा सकता है।

बाइबल के इतिहास में पश्चाताप अर्थात मन फिराव और उसके बाद विश्वास सीधा सुसमाचार के सुनने से आता है(रोमियों 10:17; प्रेरितों 2:37-38)। यीशु ने बताया कि: "समय आ चुका। परमेश्वर का राज्य निकट है। इसलिए मन फिराओं(सत्य को लेकर अपने मत को परिवर्तित करो) और सुसमाचार पर विश्वास करो!"(मरकुस 1:15)। शिष्यों ने यीशु को लेकर अपना विचार बदल दिया और उसके पीछे हो लिये(मरकुस 1:18)हालांकि उन्हें फिर भी जो कुछ मरकुस की पुस्तक में लिखा था उसे सीखना था और अभी भी बहुत से विचार और आचरणों को बदलने की ज़रूरत थी।

पतरस ने प्रेरितों 2 में सुसमाचार प्रचार किया और लोगों के हृदय छिद गये। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण कि परमेश्वर उन लोगों के हृदय में काम कर रहे थे यह था कि उन्होंने प्रेरिता से पूछा: " हमें क्या करना चाहिए?" तब पतरस ने कहा:"मन फिराओ(हमेशा के लिए अपना मन परिवर्तन कर लो) और सारा घराना यीशु मसीह के नाम में अपने पापों से क्षमा के लिए बपतिस्मा लो(प्रेरितों 2:38)। इस बात का प्रमाण कि इन तीन हज़ार लोगों ने यीशु मसीह के बारे में अपनी सोच अपने मन को बदल लिया था यह था कि,उन्होंने सुसमाचार को स्वीकार किया और पानी का बपतिस्मा लिया(प्रेरितों 2:37-41)। प्रेरितों ने बपतिस्मा लेने के लिए किसी बात की कोई और मांग नहीं की। अत: मन फिराव और मन परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रमाण सुनना,समझना और सुसमाचार को स्वीकार करना है,अर्थात अपने मन में यीशु मसीह पर विश्वास करना और अपने मुंह से अंगीकार करना है। (लूका 23:40-43;यूहन्ना 1:12; रोमियों 10:9-10)।

यीशु मसीह पर विश्वास करने तथा पानी का बपतिस्मा लेने के बाद, वह जन लगातार पश्चाताप करता,अर्थात लगातार बाइबल के सत्यों को लेकर अपने विचारों को बदलता रहता है(प्रचारों, बाइबल अध्ययन की शिक्षाओं तथा शिष्यता के प्रशिक्षण के द्वारा)। और वह अपने पश्चाताप में बने रहने की वजह से फल भी लाने लगता है(लूका 3:8)।

बाइबल में पानी से बपतिस्मा लेने के बाद किसी संस्था या संगठन का सदस्य बनना ज़रूरी नहीं ठहराया गया है। मसीह की विश्वव्यापी देह में सदस्यता पाने के लिए केवल एक ही बात की आवश्यकता है और वह हैं आत्मा का बपतिस्मा(नया जन्म)(यूहन्ना 3:7; 1 कुरिन्थियों 12:12-13)। मसीह की विश्वव्यापी देह में सदस्यता का अर्थ उसकी विश्वव्यापी कलीसिया में होने वाली गतिविधियों में प्रतिभागिता करना(1 कुरिन्थियों 12:1-31)। इस कारण विवासियों का पानी में बपतिस्मा उनके पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने का चिन्ह व प्रमाण है।

यीशु द्वारा पानी का बपतिस्मा लेने की आज्ञा की शिक्षा (मत्ती 28:19) नियमित तौर पर दी जानी चाहिए, लेकिन इसके लिए उन पर कोई ज़बरजस्ती और न ही उनसे कलीसिया की सेवा या गतिविधियों में प्रतिभागिता की पूर्वापेक्षा करनी चाहिए। उन देशों के बारे में सोचें जहां पर बपतिस्मा लेना बाकि सब चीज़ों का अन्त है। यह ज्यादा अच्छा होगा कि मण्डली किसी संगठन की सदस्या को पानी के बपतिस्में से न जोड़े, क्योंकि इससे पवित्र आत्मा के बपतिस्में तथा पानी के बपतिस्में के बीच दुविधा

उत्पन्न होती है। जो विश्वासी नया जन्म पाये हुए और यीशु मसीह की देह के वास्तविक अंग हैं, उन्हें सम्भवत: स्थानीय मण्डली की सक्रिय सदस्यता से अलग नहीं रखा जाएगा,जो कि एक पूर्ण मानवीय व ऐतिहासिक अनुसंधान केन्द्र है।

2. पानी का बपतिस्मा लेने का उचित समय इस बात पर निर्भर करता है कि मण्डली लोगों के साथ परमेश्वर के बर्ताव को किस तरह से लेती है।

वे मसीही जन जो परमेश्वर के अपने लोगों के साथ(अर्थात मसीह समाज या कलीसिया) बर्ताव पर ज़्यादा बल देते हैं शिशुओं को पानी का बपतिस्मा देते हुए प्रतीत होते हैं। वे मसीही जन जो हर एक विश्वासी के साथ परमेश्वर के बर्ताव या व्यवहार पर ज़्यादा ज़ोर देता है वह केवल व्यस्क विश्वासियों को ही पानी का बपतिस्मा देता है।

(1) परमेश्वर हर व्यक्ति के साथ उसे समाज का एक हिस्सा मानकर ही बर्ताव करता है।

परमेश्वर हर एक व्यक्ति को प्राकृतिक परिवार का एक हिस्सा(निर्गमन 20:5-6;प्रेरितों 2:39;16:31; 1 कुरिन्थियों 7:13-14),धर्मनिरपेक्ष देश का एक हिस्सा(यिर्मयाह 18:6-10) और सम्पूर्ण मानवजाति (प्रेरितों 17:26;रोमियों 5:12,18)का एक हिस्सा मानता है।

परमेश्वर हर एक विश्वासी को:

- मसीही परिवार का एक हिस्सा मानता है(यदि मान्य हो तो)
- स्थानीय मण्डली अर्थात कलीसिया का एक हिस्सा मानता है(इफिसियों 2:19;1 कुरिन्थियों 12:12-13)
- परमेश्वर की निज प्रजा का एक हिस्सा मानता है(अर्थात विश्वव्यापी कलीसिया का हिस्सा) (2कुरिन्थियों 6:16; 1पतरस 2:9-10)
- धरती पर परमेश्वर के राज्य का एक हिस्सा मानता है(मरकुस 10:13-16)।

हर एक विश्वासी को आत्मा द्वारा मसीह की देह में बपतिस्मा दिया गया है(1 कुरिन्थियों 12:12-13)। अत: पानी का बपतिस्मा इस तथ्य के साथ विकट रूप में जुड़ा हुआ है कि एक विश्वासी सार्वभौमिक मसीही कलीसिया से जुड़ा हुआ है।

(2) परमेश्वर हर एक व्यक्ति के साथ में निजी तौर पर भी व्यवहार करता है।

हर एक जन, चाहे वह धर्मी हो(विश्वासी) या अधर्मी(अविश्वासी),अपने कार्यों के आधार पर अपना हिसाब देगा(यहेजकेल 33:12-16;सभोपदेशक 12:14; रोमियों 2:6)।

हर एक विश्वासी अपने विश्वास के कारण बच जाएगा और हर एक अविश्वासी अपने अविश्वास के कारण दण्ड पाएगा(यूहन्ना 3:16-18,36;यूहन्ना 9:35-39)।

हर एक विश्वासी को पानी का बपतिस्मा इस बात के एक प्रत्यक्ष चिन्ह के रूप में देना चाहिए कि उस व्यक्ति के पाप क्षमा हो गये और धुल गये हैं(प्रेरितों 22:16)। अत: पानी का बपतिस्मा इस तथ्य के साथ विकट रूप में जुड़ा हुआ है कि एक विश्वासी अपने व्यक्तिगत विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराया जा चुका है।

3. पानी का बपतिस्मा लेने का उचित समय इस बात पर निर्भर करता है कि मण्डली परमेश्वर की वाचा को किस नज़रिये से देखती है।

परमेश्वर ने निम्नलिखित तरीके से वाचा बांधी: "मैं तुम्हारा परमेश्वर और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे"(उत्पत्ति 1:7;निर्गमन 6:7;लैवव्यवस्था 26:12;2कुरिन्थियों 6:16;1पतरस 2:9-10; प्रकाशितवाक्य 21:3,7)। पुराने नियम की वाचा पर ज़ोर देने वाले मसीही भी शिशुओं को बपतिस्मा देते हैं। लेकिन जो मसीही नये नियम में दी गयी परमेश्वर की वाचा पर जोर देने हैं वे केवल तब ही किसी जन को बपतिस्ता देते हैं जब वह व्यक्ति विश्वास में आ जाता है।

(1) पुराने नियम में परमेश्वर की व्यवस्था की वाचा आने वाली वास्तविकता की परछाई मात्र थी और अस्थाई थी।

परमेश्वर ने अब्राहम के साथ अनुग्रह की वाचा बांधी: परमेश्वर ने अब्राहम से वाचा बांधी कि वह अब्राहम और उसके वंशजों का परमेश्वर ठहरेगा; और वे परमेश्वर की निज प्रजा कहलाएंगें(उत्पत्ति 17:7)। यह अनुग्रह की वाचा नये नियम में भी सक्रिय बनी रही, लेकिन उसका प्रभाव अधिक था(इब्रानियों 8:6-13)।

परमेश्वर ने वर्षों बाद मूसा के साथ वाचा बांधी: इस वाचा ने अब्राहम से बांधी गयी वाचा की पुष्टि की(निर्गमन 6:2-8),लेकिन उसने अनुग्रह की इस वाचा के साथ में परमेश्वर की व्यवस्था को जोड़ दिया(गलातियों 3:15-19)।

परमेश्वर की अनुग्रह की वाचा एक अनन्त वाचा है(उत्पत्ति 17:7), लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था की वाचा एक अस्थायी वाचा थी(गलातियों 3:23-25)। व्यवस्था की वाचा की कुछ विशेषताएं थीं: नैतिक व धार्मिक व्यवस्थाओं को पहले पत्थर की

पटियाओं पर बौर बात में किताब में लिखा गया। लोग भविष्यद्वक्ताओं के प्रचार से ही परमेश्वर के बारे में जानते थे। उन्हें पाप क्षमा का आभास बहुत कम था, क्योंकि वे अपने पापों की क्षमा के लिए प्रायश्चित बलि के रूप में पशु बलि चढ़ाया करते थे(इब्रानियों 10:1-4)। और वे अपना खतना कराया करते थे, जो अब अनुग्रह की वाचा का प्रतीक नहीं था(उत्पत्ति 17:10-11),वरन वह तो व्यवस्था पालन का एक चिन्ह था(यूहन्ना 7:22;गलातियों 5:3-4)।

लेकिन धार्मिक विधियों की व्यवस्था के सारे नियम (जिसमें खतना भी शामिल था) कुछ ही समय के लिए वैध थे, अर्थात मसीह के प्रथम आगमन तक जब वह छाया वास्तव में वास्तविकता बन गयी(कुलुस्सियों 2:17;इब्रानियों 7:12,18-19; 8:6,13; 9:8-10; 10:1-4)।

(2) नये नियम में परमेश्वर की वाचा ने पुराने नियम की व्यवस्था को पूरा किया इस तरह उसने व्यवस्था को मिटा दिया व उसे रद्द कर दिया।

यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर, उसने व्यवस्थाओं और भविष्यद्वाणियों को पूरा किया(अर्थात पुराने नियम के प्रकाशन को)(मत्ती 5:17)और उसने धार्मिक विधियों(परछाई)व व्यवस्था को रद्द करके(कुलुस्सियों 2:14),मिटा कर(इफिसियों 2:14-15) वास्तविकता में(इब्रानियों 8:13) परिवर्तित कर दिया। बच्चों और व्यस्कों के खतना को रद्द किया, मिटा दिया गया(गलातियों 5:1-6; गलातियों 6:12-16) और उसे आत्मिक हृदय के खतने में बदल दिया(रोमियों 2:28-29; कुलुस्सियों 2:11)!

नये नियम में परमेश्वर की वाचा परमेश्वर की पुराने निमय से निम्नलिखित तरीकों से अलग है: आज परमेश्वर की व्यवस्था विश्वासियों के हृदय में लिखी है किसी बाहरी तौर पर किसी पुस्तक में नहीं। लोग अब सुनी सुनाई बातों पर नहीं विश्वास करते वरन परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप में जानते हैं। वे अपने पापों की क्षमा का अनुभव करते हैं और पापों की क्षमा के लिए कोई दिखावटी रीति या धार्मिक विधी को पूरा नहीं करते(इब्रानियों 8:6-13;9:8-10; 10:1-4)। और आत्मा के कार्यों के द्वारा उनका आत्मिक खतना(नया जन्म) हुआ है(रोमियों 2:28-29; कुलुस्सियों 2:11)।

अत: छोटे बच्चों के खतने से सम्बन्धित व्यवस्था को पूरा,रद्द कर दिया गया व मिटा दिया व उसे विश्वासियों के हृदय के खतने(नये जन्म) में परिवर्तित कर दिया गया है।

4. पानी का बपतिस्मा लेने का उचित समय इस बात पर निर्भर करता है कि मण्डली खतना और बपतिस्मे के बीच सम्बन्ध को किस नज़रिये से देखती है।

जो मसीही पुराने नियम में शिशुओं के खतने पर ज्यादा जोर देते हैं, छोटे बच्चों को बपतिस्मा देते हैं। जो मसीही नये नियम में आत्मिक खतने पर ज़्यादा ज़ोर डालते हैं विश्वास करने वाले लोगों को ही बपतिस्मा देते हैं।

कुलुस्सियों 2:11-13 में लिखा है: उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना,जिससे शारीरिक देह उतार दी जाती है, और उसके के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे,उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।" यहां पर "खतना" और "बपतिस्मा" दोनों ही आत्मा के बपतिस्में को दर्शाते हैं।

प्रश्न यह है कि:"कब एक व्यक्ति मसीह के द्वारा खतना किया जाता है?"

(1) पुराने नियम में खतना वाचा का एक चिन्ह था।

पुराने नियम में परमेश्वर ने अब्राहम से एक अनन्त वाचा बांधी थी: वह अब्राहम व उसके वंशजों का परमेश्वर होगा(उत्पत्ति 17:7) और वे उसकी प्रजा होगें(लैवव्यवस्था 26:12)। अब्राहम ने परमेश्वर से खतना को उस धार्मिकता के चिन्ह व प्रमाण के रूप में पाया जो उसे खतनारहित दशा में विश्वास के द्वारा प्राप्त हुई थी (रोमियों 4:11-12)। लेकिन परमेश्वर ने यह वाचा अकेले अब्राहम से ही नहीं बाधीं। परमेश्वर ने यह वाचा अब्राहम के पूरे घराने व परिवार(ग्रीक: ओईकोस) से बांधी! उसके घर के हर एक पुरूष को अपना खतना कराना था(उत्पत्ति 17)। अत: पुराने नियम के समय में, शारीरिक खतना इस वाचा का चिन्ह व प्रमाण था। अब्राहम के परमेश्वर और परमेश्वर की प्रतिज्ञा में (उत्पत्ति 15:5-6)व्यक्तिगत विश्वास का ही नतीज़ा था कि परमेश्वर ने अब्राहम के सम्पूर्ण घराने,परिवार, शिशुओं को अपनी वाचा में शामिल कर दिया(1कुरिन्थियों 7:14)।

3.अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा (उत्पत्ति 12:1-4 से लगभग 645 वर्ष और उत्पत्ति 17:1-7 तक लगभग 620 वर्ष। उत्पत्ति 12:4(0), उत्पत्ति 21:5(100-75=25),उत्पत्ति 25:26(+60), उत्पत्ति 47:9(+130)=कनान में 215 वर्ष+ 430 वर्ष मिस्र में(निर्गमन 12:40)=कुल 645। गलातियों 3:17 में केवल निर्गमन 12:40 का हवाला दिया गया है)

(2) पुराने व नये नियम में परमेश्वर की वाचा।

पुराने नियम में परमेश्वर की वाचा का अर्थ था कि जीवता परमेश्वर उनका परमेश्वर है और वे परमेश्वर के लोग(लैवव्यवस्था 26:12)। यह वाचा नये नियम में भी वैसी ही बनी रहती है(2 कुरिन्थियों 6:16; 1पतरस 2:9-10)।

फिर भी पुराने नियम की वाचा और नये नियम की वाचा में काफी महत्वपूर्ण अन्तर हैं(यिर्मयाह 31:31-34;इब्रानियों 8:6-13)।

- पुरानी वाचा में व्यवस्था (गलातियों 3:17-19)बाह्य रूप से किताबों में लिखी गयी थी। नयी वाचा में भीतरी तौर पर विश्वासियों के हृदय में (यिर्मयाह 31:33)लिखी गयी थी।
- पुरानी वाचा में परमेश्वर का ज्ञान केवल दिमागी ज्ञान था,जिसे भविष्यद्वक्ता लोगों को समझाया या सिखाया करते थे(यशायाह 1:3)। लेकिन नयी वाचा के तहत परमेश्वर का ज्ञान व्यक्तिगत व घनिष्ठ है(यिर्मयाह 31:34)।
- पुरानी वाचा के अन्तर्गत धार्मिक रीतियों को पूरा करने पर भी शुद्ध विवेक कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता था(इब्रानियें 9:8-10,10:1-4)। नयी वाचा के तहत मसीहियों में वास्तव में पापों की क्षमा का अनुभव किया(यिर्मयाह 31:34; इब्रानियों 9:14)।
- पुरानी वाचा में खतना एक बाहरी व शारीकिक कार्य था। नयी वाचा में हृदय का खतना एक भीतरी व आत्मिक काम है(कुलुस्सियों 2:11-13)। पुरानी वाचा में केवल नरों का शारीरिक खतना करना ही धार्मिक विधि में शामिल था जो वास्तव में आत्मिक पुरूषों व स्त्रियों दोनों के आत्मिक खतना(नये जन्म) की ओर ईशारा करता है(रोमियों 2:28-29)।
- पुरानी वाचा में सत्य को केवल भवष्यि में प्रगट होने वाले सत्य की परछाई के रूप में प्रगट किया गया(कुलुस्सियों 2:17)। नयी वाचा में वह सत्य एक वास्तविकता बन गया। पुरानी वाचा में नये जन्म और धर्मी ठहराये जाने की आश्वयकता का प्रचार किया गया। नयी वाचा ने लोगों को वास्तव में उनके पापों से स्वतन्त्र कर दिया (इब्रानियों 9:15)। नयी वाचा में नया जन्म (अर्थात आत्मा में बपतिस्मा)(यहेजकेल 36:25-28), सिद्ध धार्मिकता(पूर्ण क्षमा) और शुद्धिकरण(शुद्धि, पापों का धोया जाना)शामिल है। नयी वाचा एक(इब्रानियों 12:24)उत्तम वाचा है(इब्रानियों 7:22;8:6), क्योंकि नयी वाचा ने वह सब कुछ प्रत्यक्ष रूप में करके दिखा दिया जिसे पुरानी वाचा ने एक प्रतिरूप में रूप में प्रगट किया था।

(3) नये नियम में बपतिस्मा और खतना।

नये नियम में बपतिस्मा और खतना के बीच के विशेष समबन्ध है। कुलुस्सियों 2:11-13 सिखाता है कि मसीह में पवित्र और विश्वासयोग्य भाईयों का (कुलुस्सियों 1:2)मसीह में तब खतना हुआ (कुलुस्सियों 2:11)जब वे बपतिस्मा में आत्मा में(कुलुस्सियों 2:11) होकर(ध्यान दें: पानी के बपतिस्मा में नहीं) मसीह के साथ गाड़े गये। इसके अलावा यहां यह भी सिखाया गया है कि वे परमेश्वर की सामर्थ्य में होकर विश्वास के द्वारा मसीह के साथ पुन: जी उठे थे(कुलुस्सियों 2:12)।

लेकिन नये नियम में खतना अब शारीरिक नहीं है। यह आत्मिक खतना है!

एक तरफ तो,आत्मिक खतने का अर्थ यह है कि उन्होंने अपने पुराने मनुष्यत्व को उतारकर फेंक दिया है(पापमय स्वभाव या वास्तव में: "शरीर")(कुलुस्सियों 2:11)। इसका अर्थ यह हुआ कि जब उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया उस समय उनका पुराना मनुष्य मसीह के साथ मर गया और गाड़ा गया(कुलुस्सियों 2:12; रोमियों 6:2)।

दूसरी ओर विश्वासी के आत्मिक खतने का अर्थ है कि जब उन्होंने मसीह पर विश्वास किया तो उनका नया मनुष्यत्व मसीह के साथ जी उठा (कुलुस्सियों 2:12; रोमियों 6:3)। उनके हृदय "का खतना आत्मा के द्वारा" (रोमियो 2:28-29)हुआ था, अर्थात उन्होंने, "आत्मा के द्वारा नया जन्म पाया था"(यूहन्ना 3:3-8)।

दोनों ही पहलू(कुछ मरता है और कुछ जी उठता है)पवित्र आत्मा के बपतिस्मे तथा परमेश्वर की शक्ति में विश्वास में एक हो जाते हैं जो प्रत्यक्ष रूप में पानी के बपतिस्में में प्रगट होते हैं(कुलुस्सियों 2:12)।

(4) कई मसीही लोग अपने कूच करने के समय को पुराने नियम में शिशु के खतने की समानता में होकर देखते हैं। मसीह के साथ उनकी मृत्यु(शिशु के रूप में उनके बपतिस्में के समय) और मसीह के साथ उनके जी उठने (उनके विश्वास के अंगीकार करने) के बीच अनेकों वर्षों में विभाजित है। उनका पानी का बपतिस्मा उनके पवित्र आत्मा के अप्रत्यक्ष बपतिस्में का चिन्ह व प्रमाण है जिसे भविष्य में प्रगट होना अभी बाकि है।

अब्राहम ने पहले विश्वास किया, और उसके विश्वास के कारण ही उसे धर्मी ठहराया गया, और उसके बाद उसे पुराने नियम की वाचा के रूप में चिन्ह व प्रमाण प्राप्त हुआ:शारीरिक खतना (रोमियों 4:6-11)। लेकिन उसके वंशजों(अर्थात परमेश्वर के लोगों की दूसरी पीढ़ी)का पहले खतना हुआ(आठवें दिन)(उत्पत्ति 17:7-14) और उसके काफी बाद से विश्वास में आये(इब्रानियों 11:20-21)या बिल्कुल विश्वास में नहीं आये(इब्रानियों 3:19)।

जिन मसीहियों ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया कि पुराने नियम की वाचा के अनुसार शिशुओं का खतना किया गया था, यह निष्कर्ष निकाला कि नये नियम की वाचा में भी शिशुओं को पानी का बपतिस्मा दिया जाना चाहिए। वे विश्वास करते हैं कि कुलुस्सियों 2:11 आत्मिक खतना की बात करता है जो उस समय घटित होता है जब कोई छोटा बच्चा अपने माता पिता या कलीसिया के विश्वास या गवाही पर आधारित होकर पानी का बपतिस्मा लेता है। फिर उस बच्चे का पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ मरता और दफनाया जाता है। अत: उस शिशु का पानी का बपतिस्मा उसके पुराने मनुष्यत्व की अदृश्य मृत्यु का चिन्ह व प्रमाण है। इसी तरह ये मसीही विश्वास करते हैं कि विश्वासियों के बच्चे जो पानी का बपतिस्मा लेते हैं उन्हें नया जन्म पाया हुआ जन माना जाना चाहिए(कुलुस्सियों 2:12)।

वे विश्वास करते हैं कि *वर्षों के बाद* में, जब ये शिशु जवान होकर यीशु मसीह में व्यक्तिगत रूप में विश्वास करने लग जाएंगे, तो वे मसीही के साथ नया जीवन व्यतीत करने के लिए जी उठेगें(कुलुस्सियों 2:12)। अत: ये मसीही लोग काफी लम्बे समय अन्तराल को अवसर देते हैं ताकि वह शिशु मसीह में मर सके व दफनाया जा सके(अर्थात जब शिशु बपतिस्मा लेता है)(कुलुस्सियों 2:12) और ताकि यह युवा मसीह के साथ जी उठे(अर्थात जब वह यीशु मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करता है)(कुलुस्सियों 2:12)। ये मसीही लोग मसीह के साथ अपनी मृत्यु तथा मसीह के साथ अपने जी उठने को विभाजित करने वाले समयअन्तराल के रूप में देखते हैं।

वे भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि शिशुओं को पानी का बपतिस्मा देने के लिए भी विश्वास की ज़रूरत होती है, लेकिन यह विश्वास उनके अभिभावकों, उनके आत्मिक अभिभावकों या कलीसिया का विश्वास हो सकता है। लेकिन जब वह बच्चा बड़ा होकर व्यक्तिगत रूप में विश्वास करने लगता और युवा या व्यस्क अवस्था में सार्वजनिक तौर पर अपने विश्वास का अंगीकार करता है, तो वह बालअवस्था में लिए गये उसके बपतिस्मा की ज़िम्मेदारी उठाता है।

पुराने नियम में शारीरिक खतने का मकसद हृदय के आत्मिक खतने (नया जन्म)(लैवव्यवस्था 26:41; व्यवस्थाविवरण 10516;यिर्मयाह 4:4; 30:6;रोमियों 2:28-29; फिलिप्पियों 3:2-3) को एक दृष्टिगोचर या सदृश्य चिन्ह प्रदान करना था,हालांकि खतना करवाने वाले बच्चे के जीवन में यह आत्मिक वास्तविकता घटित होने में काफी लम्बा समय लेती है! अत: एक बच्चे का शारीरिक खतना, आत्मिक खतने या नया जन्म(वास्तविकता)का एक चिन्ह(प्रतिरूप)था जिसे खतना करवाने वाले बच्चे के जीवन में बाद में प्रगट होना था। ठीक इसी तरह से ये मसीही विश्वास करते हैं कि शिशु के पानी के बपतिस्में को आत्मा के बपतिस्में के चिन्ह (प्रतिरूप)के रूप में माना जाना चाहिए जो बपतिस्मा लेने वाले शिशु के जीवन में आने वाले समय में प्रगट होगा।

इसका अर्थ यह हुआ कि पुराने नियम में किया जाने वाला खतना आवश्यक तौर पर नये जन्म को अन्तर्निहित नहीं करता है।

ये विश्वासी पवित्र आत्मा के बपतिस्में और विश्वासी के विश्वास को एक अप्रत्यक्ष रहस्य मानते हैं (यूहन्ना 3:3-8)। नया जन्म बच्चे में भी हो सकता है(यूहन्ना 1:5)लेकिन यह किसी के जीवन में लम्बा समय भी ले सकता है। इसी कारण ये मसीही लोग दृढ़ता के साथ कहते हैं कि बच्चों के बपतिस्में ने पुराने नियम में बच्चों के खतने का स्थान ले लिया है।

हालांकि विश्वासियों के बच्चे व्यक्तिगत तौर पर यीश मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं, फिर भी वे नये नियम में परमेश्वर की वाचा और मसीही कलीसिया दोनों का हिस्सा हैं। विश्वास करने वाले अभिभावकों के बच्चे "पवित्र" हैं, अर्थात वे परमेश्वर के लिए अलग किये गये हैं(1कुरिन्थियों 7:14)। इसी कारण इन मसीहियों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इन बच्चों को नये नियम की वाचा के रूप में पानी को बपतिस्मा दिया जाना चाहिए। ये मसीही लोग जोर देते हुए कहते हैं कि न केवल शिशु को बपतिस्मा देते समय तथाकथित नया जन्म वरन बाद में यीशु मसीह में उनका विश्वास परमेश्वर का अनुग्रह से भरा वरदान है(प्रेरितों 13:48; 16:14; 18:27; इफिसियों 2:8-9; फिलिप्पियों 1:29; 2:12-13; 2 पतरस 1:1 ; 2 तीमुथीयुस 3:15; 2पतरस 1:1)।

(5) कई मसीही लोग अपने कूच करने के समय को नये नियम में आत्मिक खतना की समानता में होकर देखते हैं। मसीह के साथ उनकी मृत्यु और मसीह के साथ उनका जी उठना समकालिक होता है, अर्थात जब वे आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं या यीशु मसीह में विश्वास करते हैं। उनका पानी का बपतिस्मा उनके पवित्र आत्मा के अप्रत्यक्ष बपतिस्में का चिन्ह व प्रमाण है,जो पहले ही उनके जीवन में पहले ही हो चुका है।

नये नियम में आत्मिक खतने का स्पष्ट अर्थ आत्मिक नया जन्म है। वे मसीही जन जो इस तथ्य पर अधिक ज़ोर देते हैं कि नये नियम में जब लोगों ने यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर विश्वास किया तो उनका आत्मिक खतना हुआ था, इस नतीजे पर पहुँचे कि लोगों को केवल तब ही बपतिस्मा दिया जाना चाहिए जब वे यीशु मसीह पर ईमान ले आयें।

ये लोग अपने पापों और पुराने मनुष्य के पापमय स्वभाव में मरे हुए थे (कुलुस्सियों 2:13)। लेकिन जब वे यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करने लगे तो उनके सारे पाप वास्तव में क्षमा हो गये(कुलुस्सियों 2:14)और उन्होंने सब प्रकार की बुरी शक्तियों से मुक्ति प्राप्त की(कुलुस्सियों 2:15)। फिर भी,इस सच्चाई का व्यवहारिक आभास होने में समय लग सकता है। इसके अलावा वे यह भी विश्वास करते हैं कि कुलुस्सियों 2:11 आत्मिक खतना की बात करता है जो उनके व्यक्तिगत *विश्वास के सन्दर्भ में उनकी आत्मा में* उनके बपतिस्मा लेते ही क्षण भर में हो जाता है। तब उनका पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ मर जाता और दफन किया जाता है। *उनका पानी का बपतिस्मा उनके पवित्र आत्मा के अप्रत्यक्ष बपतिस्में का चिन्ह व प्रमाण है,जो इससे पहले ही उनके जीवन में स्थान ले चुका है।* ये मसीही विश्वास करते हैं कि जो लोग यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करते हैं,नया जन्म पाये मसीहियों में गिने जाने चाहिए(कुलुस्सियों 2:12)।

वे विश्वास करते हैं कि जिस क्षण लोग आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करते हैं उसी क्षण वे मरते,दफन होते और मसीह के साथ जी उठते हैं(नया जन्म)अर्थात, जब वे व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करने लगते हैं। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण पानी का बपतिस्मा होता है। ये मसीही विश्वास करते हैं कि पुराने मनुष्यत्व को(उनका पापमय स्वभाव या वास्तव में: उनका शरीर)(यीशु मसीह मृत्यु और गाड़े जाने की समानता जब वे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं)(कुलुस्सियों 2:12) उतारे जाने का ठीक उसी समय या क्षण में होता है जब कोई जन अपने नये मनुष्यत्व अर्थात नये जन्म को(यीशु मसीह के साथ जी उठने की समानता जब वे यीशु मसीह पर विश्वास करने लगते हैं)(कुलुस्सियों 2:12) प्राप्त करता है। इन मसीहियों का मानना है कि मसीही जीवन में मसीह के साथ मरने और जी उठने के बीच में कोई समयान्तराल नहीं होता, अर्थात, जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह पर व्यक्तिगत विश्वास करता है तब ये दोनों घटनाएं एक ही समय में घटित हो जाती हैं।

वे यह भी मानते हैं कि पानी का बपतिस्मा दिये जाने के समय में विश्वास निश्चय तौर पर अति आवश्यक है , लेकिन यह विश्वास बपतिस्मा लेने वाले का *व्यक्तिगत विश्वास* होना चाहिए। जब वे सार्वजनिक तौर पर अपने विश्वास का अंगीकार कर लें तब ही उन्हें बपतिस्मा दिया जाना चाहिए। पुराने नियम की वाचा में होकर शारीरिक खतने और नये नियम की वाचा में होकर आत्मिक खतने के बीच में स्पष्ट अन्तर है। नये नियम में काल में किया जाने वाला खतना निश्चय तौर पर शिशुओं का शारीरिक खतना नहीं था, वरन जब वे यीशु मसीह पर ईमान लाए, पवित्र आत्मा ने उनके हृदयों का आत्मिक खतना किया(रोमियों 2:28-29)! जिस प्रक्रिया में पुराने मनुष्य का उतारा जाना(अर्थात शरीर का)(कुलुस्सियों 2:11;रोमियों 6:6-7) और नये मनुष्यत्व का पहिना जाना शामिल था जिसमें पवित्र आत्मा का वास था(रोमियों 2:28-29)।

इसका अर्थ है कि नये नियम में आत्मिक खतने में सदैव नया जन्म समाविष्ट होता है!

ये मसीही नये जन्म(आत्मा द्वारा बपतिस्मा पर) और विश्वास के बीच में एक घनिष्ठ सम्बन्ध पर अत्यधिक बल देते हैं। हालांकि मसीहियों के लिए पवित्र आत्मा द्वारा दिया जाने वाले बपतिस्में का समय और तरीका हमेशा एक भेद या रहस्य बना रहता है(यूहन्ना 3:8),लेकिन नये जन्म को उस क्षण के रूप में परिभाषित किया जाता है जिस क्षण में कोई व्यक्ति व्यक्तिगत तौर पर यीशु मसीह में विश्वास करने लगता है(यूहन्ना 1:12-13; 7:37-39; प्रेरितों 11:14-18; प्रेरितों 15:7-11; इफिसियों 1:13-14; 2 थिस्लुनिकियों 2:13-14; तीतुस 1:1;3:3-7)। अतः इन मसीहियों का मानना है कि नये नियम में पानी का बपतिस्मा केवल पुराने में हुए शारीरिक खतने का विकल्प नहीं है।

क्योंकि शिशु अभी व्यक्तिगत तौर से यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते और न ही वे अपने नये जन्म को प्रमाणित कर सकते हैं, इसलिए उन्हें बपतिस्मा नहीं दिया जाना चाहिए। इसीलिए ये लोग इस बात पर ज़ोर देते हैं कि लोगों को केवल तभी पानी का बपतिस्मा देना चाहिए जब वे यीशु मसीह पर विश्वास करें और अपने नये जन्म और धर्मी ठहराये जाने को प्रमाणित कर सकें। इसके अलावा से मसीही विश्वास करते हैं कि विश्वास(इफिसियों 2:8-9) और नया जन्म (यूहन्ना 1:12-13) परमेश्वर के अनुग्रह से मिलने वाले वरदान हैं।

5. विश्वासियों की प्रथम पीढ़ी के पानी का बपतिस्मा लेने का उचित समय नये नियम के मिश्नरी सन्दर्भ पर निर्भर करता है।

विश्वासियों की प्रथम पीढ़ी को नये नियम काल के मिश्नरी सन्दर्भ में पानी का बपतिस्मा दिया गया। वे सारे विश्वासी गैर-मसीही पृष्ठभूमि से आये थे, चाहे वे यहूदी हों या गैर यहूदी पृष्ठभूमि से हों।

संसार के सारे मसीही इस बात पर समहती दर्ज़ करते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विश्वासियों को केवल तभी पानी का बपतिस्मा देना चाहिए जब वे यीशु पर विश्वास ला चुके हों।

(1) हर जन को बपतिस्मा देना।

हर जन को सुसमाचार सुसमाचार सुनाया गया(यहूदी,सामरी,तथा अन्यजातियों को)। जब उन्होंने विश्वास किया तो उन्हें पानी का बपतिस्मा दिया गया(यूहन्ना 4:1;प्रेरितों 2:37-39;41;8:36-38;10:34-36,42-48)।

(2) सम्पूर्ण परिवारों को बपतिस्मा देना।

सम्पूर्ण परिवार व उनके दास दासियों को भी सुसमाचार सुनाया गया। जब उन्होंने विश्वास किया तब उन्हें पानी का बपतिस्मा दिया गया(प्रेरितों 16:14-15,30-34; 18:7-8; 1कुरिन्थियों 1:16)। लेकिन इस तथ्य को न तो साबित किया जा सकता और न ही इनकार किया जा सकता कि इन घरों में छोटे बच्चे भी थे, तो क्या उन्हें भी बपतिस्मा दिया गया था या नहीं।

6. विश्वासियों की प्रथम पीढ़ी के पानी का बपतिस्मा लेने का उचित समय इस बात पर निर्भर करता है कि मसीही लोग बाइबल में नये नियम की कलीसिया को किस रीति से परिभाषित करते हैं।

दूसरी पीढ़ी के विश्वासियों को पानी का बपतिस्मा नये नियम काल के पश्चात बढ़ती हुई मसीही कलीसिया के सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए दिया गया।

संसार भर के मसीही इस बात को लेकर सहमती प्रगट करते नहीं नज़र आते कि दूसरी पीढ़ी के विश्वासियों को कब बपतिस्मा दिया जाना चाहिए।

आत्मा में बपतिस्मा पाने के दो पहलू होते हैं: इसका अर्थ परमेश्वर के चुने हुए लोगों या मसीह की देह के साथ भागीदार हो जाना(जो कि एक सामान्य नज़रिया है) (1कुरिन्थियों 12:13) और इसका अर्थ नया जन्म पाना और धर्मी ठहराया जाना(क्षमा पाना) (यह एक निजी नज़रिया है) है (प्रेरितों 2:38)।

क्योंकि आत्मा में बपतिस्मा पाने के दोनो ही मतलब है,संसार भर में अलग अलग मसीहियों ने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने के सामूहिक पहलू और व्यक्तिगत पहलू को अभिव्यक्त करने के अलग अलग व्यवहारिक तरीके खोज लिये है,पानी में बपतिस्मा इसका प्रत्यक्ष चिन्ह है।

(1) कई मसीही एक सख्त साम्प्रदायिक तरीके का चुनाव करते हैं।

इन मसीहियों के लिए कलीसिया सम्पूर्ण मसीह की देह(एक जीव) (1कुरिन्थियों 12:12-27) और परमेश्वर के नये नियम में अपने निजी लोगों के समाज से बढ़कर है(1 पतरस 2:9)।

सबसे पहले एक विश्वासी मसीह की देह का एक हिस्सा है और बाद में वह यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों को मिलाकर बने एक संगठन का हिस्सा है। देह में केवल मुंह और हाथ ही नहीं होता। ठीक इसी प्रकार से, कलीसिया का मतलब किसी एक विश्वासी से बढ़कर है। पानी से बपतिस्मा पाना वास्तव में एक चिन्ह और मुहर है कि एक व्यक्ति मसीह की देह का(1कुरिन्थियों 12:13) एक भाग, परमेश्वर की निज प्रजा का(गलातियों 3:27,29) एक हिस्सा है अर्थात विश्वव्यापी कलीसिया का एक भागे है।

ये मसीही लोग मानते हैं कि पुराने नियम में दिये गये परमेश्वर की निज प्रजा या कलीसिया (ग्रीक: इकलीसिया) (न्यायियों:20:2; 2 इतिहास 29:28; भजन 107: 32)के उदाहरण का, जिसमें बीते समय में (उत्पत्ति 17:7,12)परमेश्वर के चुने हुए लोगों के बच्चे भी शामिल थे,भविष्य में परमेश्वर की नये नियम की निज प्रजा या कलीसिया (ग्रीक: इकलीसिया) (मत्ती 16:18)में अनुसरण किया जाना चाहिए।

इन मसीहियों में एक प्रश्न पर आकर एक मतभेद उत्पन्न हो जाता है, कि क्या इन बपतिस्मा पाये हुए बच्चों को उद्धार पाया हुआ जन (धर्मी, नया जन्म पाया)माना जा सकता है, या इस प्रकार का वर्गीकृत करने वाला वाक्य इनके लिए बोला जाना इनके लिए उचित होगा या नहीं। अधिकतर मसीही लोग बपतिस्मा पाये हुए शिशु को भी कलीसिया की सम्पत्ति मानते हैं लेकिन बढ़े होकर विश्वासी न ठहरने पर उससे इस मान्यता से बाहर कर दिया जाता है(1 शमूएल 1:11,22;2:26; 2शमूएल 12:22-23; लूका 2:41-52; 2 तीमुथीयुस 3:14-15)।

बाइबल एक विश्वासी के पति या पत्नी और उसके बच्चों को "पवित्र" अर्थात "परमेश्वर के लिए अलग किया हुआ और समर्पित मानती है"(1कुरिन्थियों 7:14)। कुरिन्थियों की कलीसिया को "मसीह में पवित्र किये गये"(1कुरिन्थियों 1:2; 6:11) कहा गया है। लेकिन, इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि बाइबल इन बच्चों या अविश्वासी अभिभावकों को "नया जन्म पाया हुआ" या "नैतिक जीवन में शुद्ध" ठहरा रही है। वरन बाइबल उन्हें "धार्मिक रीति के आधार पर शुद्ध", जिसका अर्थ कलीसिया द्वारा बुरे संसार और उसकी बुराई से अलग करना है। ये बच्चे विश्वासियों के समाज को समर्पित किये गये हैं, और वे मण्डली में विश्वासी अभिभावकों तथा कलीसिया के अन्य अभिभावकों के प्रभाव से घिरे रहते हैं। बच्चों और अविश्वासी अभिभावकों को बाहरी तौर पर मण्डली की सम्पत्ति माना जाता है या यह माना जाता है कि वे मण्डली के प्रभावक्षेत्र में खड़े हैं।

लेकिन ये मसीही हर व्यक्ति के महत्व पर भी विश्वास करते हैं। इस कारण वे ऐसी नयी मसीही पद्धति या कलीसिया समारोह को जोड़ देते हैं जिसे बाइबल में न तो सिखाया और न ही उसका वर्णन किया गया है: उनके बपतिस्मा लेने वाले बच्चों को एक युवा या व्यस्क के रूप में इस बात के चिन्ह व प्रमाण के रूप में सार्वजनिक तौर पर (रोमियों 10:9-10)अपने विश्वास का अंगीकार करना अनिवार्य होता है, कि वे नया जन्म पा चुके व धर्मी ठहराये जा चुकें हैं।

(2) दूसरे मसीही एक सख्त व्यक्तिगत तरीके का चुनाव करते हैं।

इन मसीहियों के लिए कलीसिया सबसे बढ़कर अनेक विश्सासियों का एक व्यवस्थित समाज (संगठन) है।
सबसे पहले वह व्यक्ति यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करता है और उसके बाद ही वह परमेश्वर के लोगों के समाज अर्थात कलीसिया का हिस्सा बनता है(प्रेरितों 2:41-42)। नये नियम के डी मिश्नरी सन्दर्भ में (प्रेरितों) विश्वासियों के बच्चों का कोई ज़िक्र नहीं दिया गया है। कुछ समय के बाद में विश्वास करने वाले बच्चों का जिक्र किया गया है(इफिसियों 6:1-3;कुलुस्सियों 3:20-21; 1तीमुथीयुस 4:12; 2 तीमुथीयुस 3:14-15)।नया नियम निश्चय तौर पर सिखाता है कि पानी का बपतिस्मा इस बात का एक ठोस प्रमाण व चिन्ह है कि उस व्यक्ति ने नया जन्म पा लिया है और उसे धर्मी ठहराया जा चुका है।(प्रेरितों 9:17-18;22:16;तीतुस 3:4-8)।

लेकिन ये विश्वासी इसके साथ साथ मसीही समाज(कलीसिया) पर भी विश्वास करते हैं। इस कारण वे भी ऐसी नयी मसीही पद्धति या कलीसिया समारोह को जोड़ देते हैं जिसे बाइबल में न तो सिखाया और न ही उसका वर्णन किया गया है: कि उनके अपरिपक्व बच्चे "मसीह को समर्पित हैं"(1शमूएल1:11,28) या उससे भी बढ़कर"मसीह की ओर से धन्य हैं"(मरकुस 10:13-16) जो इस बात का चिन्ह है कि वे मसीह के देह के या परमेश्वर की निज प्रजा के भाग हैं । (1कुरिन्थियों 7:14)

इन शिशुओं में उद्धार के लिए(धर्मी ठहराये जाने और नये जन्म के लिए) कुछ भी समाविष्ट नहीं है। लेकिन पुराना नियम (2 शमूएल 12:23) और नया नियम(मरकुस 10:10-13;1 कुरिन्थियों 7:14) उन्हें परमेश्वर की निज प्रजा का हिस्सा मानते हैं।

साराशं

बपतिस्में का साम्प्रदायिक तरीका	**व्यक्तिगत रूप में बपतिस्मा देने का तरीका**
• अपरिपक्व बच्चे को एक चिन्ह के रूप में पानी का बपतिस्मा दिया जाता है कि वह कलीसिया का एक भाग है • बाद में वह सम्भवत: यीशु मसीह पर ईमान लाकर सार्वजनिक तौर अपने विश्वास का अंगीकार करता है, जो इस बात का चिन्ह होता है कि नया जन्म पाया हुआ या धर्मी ठहराया जा चुका है।	• एक अपरिपक्व बच्चा मसीह को समर्पित किया जाता या मसीह के द्वारा आशीषित किया जाता है, जो इस बात का चिन्ह होता है कि वह कलीसिया का एक भाग है। • बाद में वह सम्भवत: यीशु मसीह पर ईमान लाकर सार्वजनिक तौर अपने विश्वास का अंगीकार करता है और उसे पानी ञ का बपतिस्मा एक चिन्ह के रूप में दिया जाता है कि वह जन नया जन्म जाया हुआ और धर्मी ठहराया जा चुका है।

ञ.प्रश्न कि क्या किसी व्यक्ति को दुबारा पानी का बपतिस्मा दिया जा सकता है

1. दो भिन्न नज़रिये

यह खण्ड या भाग केवल उन लोगों के लिए सीमित है जिन्होंने बाल अवस्था में बपतिस्मा लिया था।
कलीसियाएं आपस में इस विषय पर एक मत नहीं होती कि यदि एक जन जिसने बचपन में बपतिस्मा लिया था अब व्यस्क होकर यीशु मसीह पर व्यक्तिगत रूप में विश्वास करने पर दुबारा बपतिस्मा ले सकता है कि नहीं।

(1) दुबारा पानी का बपतिस्मा दिये जाने के विरोधी मसीही।

वे लोग जो साम्प्रादिक तौर पर आत्मा द्वार बपतिस्मा देने की वकालत करते हैं वे किसी एक बार पानी का बपतिस्मा ले चुके व्यक्ति को दुबारा पानी का बपतिस्मा देने का विरोध करते हैं। वे मानते हैं कि ऐसा करने से दूसरी बार दिया जाने वाला बपतिस्मा(विश्वासी के रूप में पानी का बपतिस्मा) पहली बार दिये जाने वाले बपतिस्मा (शिशु के रूप में बपतिस्मा) को *रद्द या अस्वीकृत* कर देना है। वे पानी का बपतिस्मा को जीवन में कवेल एक ही बार घटित होने वाला एक आत्मिक घटना,चिन्ह व प्रमाण मानते हैं: जिसके द्वारा व्यक्ति परमेश्वर के निज प्रजा, अर्थात कलीसिया का भाग बन जाता है।
आत्मा से बपतिस्मा लेने (नया जन्म, धर्मी ठहराये जाने, सारे पापों को धोने) के व्यक्तिगत नज़रिये को सामान्य तौर पर पानी के बपतिस्मा से जोड़कर नहीं ,वरन सार्वजनिक तौर पर विश्वास के अंगीकार से जोड़कर देखा जाता है। आत्मा से बपतिस्मा पाने के बहुत से अर्थों को मान्यता दी गयी है, लेकिन उन्हें पानी का बपतिस्मा लेने और परिपक्व विश्वासी बनने के बाद सार्वजनिक तौर पर अपने विश्वास का अंगीकार करने तक के समयान्तर के आधार पर विभाजित किया गया है।

(2) दुबारा पानी का बपतिस्मा दिये जाने का विरोध न करने वाले मसीही।

जो लोग आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाने के विषय में व्यक्तिगत नज़रिये की वकालत करते हैं सामान्य तौर पर परिपक्व विश्वासी (जिसका एक शिशु के रूप में बपतिस्मा हो चुका है) के दुबारा पानी का बपतिस्मा लेने पर कोई विरोध नहीं करते। वे उनके शिशु के रूप में लिए गये प्रथम पानी के बपतिस्में का परमेश्वर की निज प्रजा अर्थात कलीसिया में जुड़ जाने के रूप में सम्मान करते हैं। शिशु के रूप में उनका बपतिस्मा उनके अभिभावकों और मण्डली के द्वारा विश्वास के निमित्त किया गया काम था। वे विश्वासी के रूप में उनके दूसरे पानी के बपतिस्में का सम्मान करते हैं, जो उनके पवित्र आत्मा के बपतिस्में (नया जन्म, मन परिवर्तन, विश्वास, धार्मिकता, पापों के धोये जाने) का चिन्ह व प्रमाण है। विश्वासी के रूप में उनका पानी का बपतिस्मा व्यक्तिगत विश्वास का कार्य है। जब वे दूसरी बाद पानी का बपतिस्मा लेते हैं तो वे दूसरे बपतिस्में का पहले वाले बपतिस्में को रद्द करने वाले बपतिस्में के रूप में नहीं देखते। वे इस तथ्य को नज़रअन्दाज़ नहीं करते कि जब शिशु के रूप में उनका बपतिस्मा किया गथा तो उस कृत के द्वारा वे परमेश्वर की निज प्रजा अर्थात कलीसिया के एक अंग बन गये थे। लेकिन पानी में उनका दूसरी बार बपतिस्मा सबसे बढ़कर इस बात का चिन्ह है कि उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लिया है(नया जन्म, मसीह के साथ एकता और मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त पूर्ण किये गये कामों का भागीदार होना जो उनके भूतकाल, वर्तमान, और भविष्यकाल पर प्रभाव डालता है, जिसमें उनका धर्मी ठहराया जाना या पापों का धोया जाना और पापों की क्षमा शामिल है)।

2.बाइबल का एकमात्र उदाहरण जहां पर लोगों ने दो बार पानी का बपतिस्मा लिया।

बाइबल में केवल एक ही हवाला हैं जहां पर लोगों ने दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लिया वह प्रेरितों 19:1-7 में पाया जाता है। पौलुस को पता चला कि इफिसुस में कुछ शिष्यों को पवित्र आत्मा नहीं मिला है(अर्थात,उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं पाया)। वे यीशु मसीह के चेले नहीं,वरन यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले थे। वे मसीही नहीं थे वरन उन्होंने तो पवित्र आत्मा की चर्चा तक नहीं सुनी थी। हो सकता है कि वे यरूशलेम में मनाये जाने वाले तीर्थयात्रियों के पर्व (व्यवस्थाविवरण 16:16)में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले बने हों, जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला प्रचार किया करता और लोगों को यरदन नदी में बपतिस्मा दिया करता था। उन्हें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के हाथों से यूहन्ना का बपतिस्मा प्राप्त किया था जो इस बात का चिन्ह था कि वे आने वाले मसीह के लिए तैयार हो रहे हैं(मरकुस 1:4-8)।

यीशु मसीह के चेलों ने (यूहन्ना 1:33;प्रेरितों 1:13-15)न केवल यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बपतिस्मा या मसीही बपतिस्मा(यूहन्ना 3:22) नहीं लिया था, लेकिन उन्होंने यीशु के द्वारा शिक्षा भी पायी थी। उन्हें दुबारा बपतिस्मा पाने की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि यूहन्ना का बपतिस्मा(मरकुस 1:4)और मसीही बपतिस्मा (प्रेरितों 2:38)दोनों की पापों की क्षमा को

दर्शाते हैं। लेकिन, यीशु मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त कार्यों को पूरा करने के बाद, उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया(प्रेरितों 1:5;प्रेरितों 2:1-4)।

लेकिन यूहन्ना के इन शेष चेलों ने केवल यूहन्ना बपतिसम देने वाले का बपतिस्मा लिया हुआ था,उन्होंने न तो यीशु मसीह की शिक्षा प्राप्त की थी(अर्थात उसकी मृत्यु और उसके जी उठने के बारे में) और न ही उन्हें आत्मा का बपतिस्मा मिला था। उनका पानी का बपतिस्मा,पवित्र से प्राप्त बपतिस्में का प्रतीक नहीं था। इस कारण उनका पहला पानी का बपतिस्मा सिद्ध नहीं था जिस वजह से उन्हें दूसरी बार पानी का बपतिस्मा दिया जाना ज़रूरी था।

पौलुस ने उन लोगों को यीशु का सुसमाचार सुनाया और कहा कि उन्हें यीशु पर विश्वास करने की ज़रूरत है(अर्थात उद्धार के निमित्त उसके द्वारा किये गये कार्यों पर)। उसने उन्हें बताया कि यीशु मसीह उस पर विश्वास करने वालों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रदान करते हैं(मरकुस 1:8;रोमियों 10:9-10)। उसने उनसे वही कहा जो यीशु ने कहा था: कि उन लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए नया जन्म पाना या स्वर्ग से नया जन्म पाना ज़रूरी है(यूहन्ना 3:3-8)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले यीशु में विश्वास करने लगे और उन्होंने यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया(मत्ती 28:19)। यीशु मसीह का एक प्रेरित होने के नाते, पौलुस के पास परमेश्वर के राज्य की कुँजिया भी थी(मत्ती 16:18-19;18:19)। उसने अपने हाथ उन चेलों पर रखे और वे पवित्र आत्मा से भर गये(अर्थात, उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया)। बाइबल में यह नहीं बताया कि उन्हें यह सुझाव किसने दिया कि उन्हें फिर से बपतिस्मा लेना चाहिए। प्रेरितों 19 में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना के वर्णन के मामले में कोई धर्मवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है। इस कारण बाइबल के इस गद्यांश को दूसरी बार पानी का बपतिस्मा देने वाली शिक्षा या सिद्धान्त के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। लेकिन जो बात स्पष्ट है वह यह है कि चेलों ने आत्मा का बपतिस्मा का बपतिस्मा नहीं पाया था और प्रेरित ने उन्हें दूसरी बार पानी का बपतिस्मा दिया जो कि अन्ततः इस बात का चिन्ह व प्रमाण था कि उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया है।

यह एक मिश्नरी परिस्थिति या घटना थी जिसके अन्तर्गत पहली पीढ़ी यीशु मसीह पर विश्वास करने लगी। जिस प्रकार से पहले यहूदी थे जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया था(प्रेरितों 2:37-41) और प्रथम गैर मसीही जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया (1कुरिन्थियों 12:12-13;इफिसियों 1:13),उसी प्रकार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों में ये पहले थे जिन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास करने के बाद पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया।

3.मसीही लोग आज अलग ही निष्कर्ष निकालते हैं।

यह अति स्पष्ट है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों का दूसरा बपतिस्मा उस विवादित बपतिस्मा के समान नहीं था जिसमें पानी का बपतिस्मा लेने वाले शिशु

- बढ़े होकर यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करने के बाद दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लेते हैं।
- या दूसरी बार डुबकी का बपतिस्मा तब लेते हैं जब वे पहली बार दिये गये बपतिस्में के तरीके से सन्तुष्ट नहीं होते(छिड़काव द्वारा शिशु का बपतिस्मा)।

यूहन्ना के चेले मसीह या उसकी कलीसिया से कोई सम्बन्ध नहीं रखते थे और इसलिए उन्होंने इस बात के चिन्ह व प्रमाण के तौर पर दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लिया कि वे अब मसीह और उसकी कलीसिया के एक हिस्सा हैं। लेकिन यीशु के चेले मसीह और मसीह की कलीसिया के साथ जुड़े हुए था इस कारण उन्हें दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लेने की कोई जरूरत नहीं थी।

अब प्रश्न ये है:

- "क्या मसीही अभिभावकों के बच्चे मसीह और उसकी कलीसिया के हिस्सा हैं?"
- "जिन लोगों ने एक शिशु के रूप में पानी का बपतिस्मा लिया है, उन्हें बड़े होकर तथा यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करने के बाद दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है?"

(1) मसीही जो दूसरी बार पानी के बपतिस्में का विरोधी होता है।

वह कलीसिया के साम्प्रदायिक पहलू पर जोर देता है(परमेश्वर की निज प्रजा में माता पिता और मण्डली के विश्वास द्वारा जुड़ना)। वह विश्वास करता है कि जब वह बाद में यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करने लगा तौभी शिशु के रूप में लिया गया उसका बपतिस्मा इस बात का चिन्ह था कि वह परमेश्वर की निज प्रजा, अर्थात कलीसिया का एक भाग है। वह

इस बात को भी मानता है कि आत्मा से बपतिस्मा पाने का एक और अर्थ(नया जन्म,धर्मी ठहराया जाना)अपनी उसके जीवन की वास्तविकता बन गया है। इसलिए वह दूसरी बार पानी का बपतिस्मा नहीं लेता है,क्योंकि वह पहले ही परमेश्वर की निज प्रजा अर्थात कलीसिया का एक भाग बन चुका है। वह प्रेरितों 19:1-7 को धर्मी ठहराये जाने के लिए दूसरा बपतिस्मा देने का आधार नहीं मानता, क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों के विपरीत वह पहले ही कलीसिया का एक भाग है।

इस नज़रिये का एक फायदा यह है कि एक शिशु के रूप में उसका बपतिस्मा उसकी पूरी मण्डली के लिए बहुत महत्व रखता था। शिशु का बपतिस्मा पूरी मण्डली के विश्वास का एक प्रतीक है कि विश्वासी की वह अपरिपक्व सन्तान निश्चित तौर पर परमेश्वर की निज प्रजा अर्थात कलीसिया का एक हिस्सा है। एक व्यक्ति अपने जीवन में केवल एक ही बार परमेश्वर की कलीसिया का भाग बनता है! सारा ज़ोर कलीसिया होने के साम्प्रदायिक पहलू पर दिया जा रहा है। शिशु के बपतिस्में को स्वीकार करने के परिणामस्वरूप पूरी कलीसिया का विश्वास मज़बूत होता है कि मण्डली के जितने लोग बच्चे के बपतिस्मे में भागी हुए थे वे सभी परमेश्वर की निज प्रजा अर्थात कलीसिया का महत्वपूर्ण अंग हैं। यह नज़रिया मण्डली के दूसरे सदस्य के प्रति प्रेम को भी प्रगट करता है, क्योंकि इससे बच्चों के बपतिस्मे में विश्वास रखने वाले लोगों को कोई ठोकर नहीं लगती।

(2) जो मसीही दूसरी बार पानी का बपतिस्मा ले लेते है।

वह कलीसिया होने के व्यक्तिगत पहलू या नज़रिये पर ज़ोर देता है:खास तौर पर कि वह अपने व्यक्तिगत विश्वास के कारण मसीह या मसीह की कलीसिया से जुड़ा हुआ है। वह यह विश्वास करता है कि जब वह बाद में यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर ईमान ले आया तो उसे दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लेना इसलिए जरूरी था क्योंकि पहले तो यह पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने का चिन्ह है (अर्थात उसने नया जन्म पा लिया है,वह धर्मी ठहराया जा चुका है और उसके सारे पाप धुल चुके हैं, और वह पूरी तरह से क्षमा पा चुका है)। वह आत्मा से बपतिस्मा पाने के अर्थ का विरोध नहीं करता जिसका मतलब परमेश्वर की निज प्रजा का एक भाग हो जाना है, वरन वह विश्वास करता है कि आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ केवल परमेश्वर की कलीसिया का सदस्य होना नहीं होता । वह प्रेरितों के काम 19:1-7 को धार्मिकता के लिए दूसरी बार पानी के बपतिस्में को आधार मानता है, क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों के समान, वह भी व्यक्तिगत तौर पर प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से पहले नया जन्म पाया हुआ नहीं था।

इस नज़रिये का फायदा यह है कि यीशु मसीह में विश्वास करने के बाद उसका दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लेना उसके लिए निजी तौर पर बहुत मायने रखता है। विश्वासियों का बपतिस्मा सभी विश्वाससियों के लिए एक प्रतीक या चिन्ह है कि उन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पाया है(अर्थात उसे पवित्र आत्मा के द्वारा बपतिस्मा दिया गया है)और वह पूरी तरह से क्षमा पा चुका है(अर्थात परमेश्वर ने उसे धर्मी ठहरा दिया है और उसके सारे पाप धुल गये हैं)।
एक जन यीशु मसीह पर ईमान लाता है और सम्पूर्ण जीवन काल में सिर्फ एक बार नया जन्म(आत्मा का बपतिस्मा) पा लेता है। सारा जोर मसीही होने के व्यक्तिगत पहलू पर दिया गया है। दूसरी बार पानी का बपतिस्मा लिये जाने से उसके अपने व्यक्तिगत विश्वास में स्थिरता आती है कि वह अब नया जन्म पा चुका है(अर्थात वह अब पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा चुका है)। और क्योंकि वह अब सार्वजनिक तौर पर अपने जीवन में परमेश्वर के कामों की गवाही देता है, यह प्रमाण है कि वह विश्वास कर चुका है, जिससे मण्डली का विश्वास भी बढ़ता है। इससे मण्डली विश्वास से प्रार्थना करने और सुसमाचार प्रचार करने के लिए प्रोत्साहित होती है।

ट. मसीहियों और बपतिस्मा में सम्बन्ध

1.दोनों मतों के मसीहियों को मसीह में आत्मिक एकता पर ज़ोर देना होगा।

"और इस सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो।"(कुलुस्सियों 3:14)
"और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यन्त करो। एक ही देह है और एक ही आत्मा....एक ही प्रभु,एक ही विश्वास और एक ही आत्मा"(इफिसियों 4:3-5)।
"मसीहियों के दोनों समूहों को एक मसीह की देह (अर्थात एक कलीसिया)होने के सामूहिक या साम्प्रदायिक पहलू पर और आत्मा में बपतिस्मा लेने(अर्थात नया जन्म पाने के) व्यक्ति पहलू पर जोर देना चाहिए।"क्योंकि हम सब ने एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया"(1कुरिन्थियों 12:13)।

कोई आज्ञाएं नहीं। पानी का बपतिस्मा दिये की उम्र(किसी परिवार का बच्चा होने के नाते)और पानी का बपतिस्मा देने का तरीका(अर्थात, छिड़काव,पानी को उण्डेलना या पानी में डुबाना) जटिल मुद्दों में से एक है,क्योंकि बाइबल में इसके बारे में न तो बताया गया,न सुझाया गया न अनिवार्य ठहराया गया और न ही मना किया गया है।

आज्ञाएं। जटिल मामलों में मसीहियों के दोनों समूहों को एक दूसरे भिन्न विचारों का आदर करते हुए एक दूसरे को स्वीकार कर लेना चाहिए। "इसलिए जैसे मसीह ने तुम्हें ग्रहण किया है वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो....विवादित मामलों को लेकर किसी पर दोष न लगाओ.....ताकि एक मन और एक मुंह होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की बड़ाई करो। और जिस प्रकार से मसीह उन्हें निस्वार्थ प्रेम के साथ प्रेम करता है वे भी एक दूसरे को वैसे ही प्रेम करें(यूहन्ना 13:34-35)

2.मसीहियों के दोनों समूहों को बाइबल की आज्ञाओं पर ज्यादा ज़ोर देना चाहिए न कि विवादिल मुद्दों पर।

ज्यादातर मसीही लोग उन मुद्दों पर चर्चा या विवाद करते हैं जिन्हें न तो बाइबल में सिखाया, न बताया, न आदेश दिया और न मना किया गया है, वरन से अलग अलग संगठनों की परम्पराओं का हिस्सा हैं। यीशु ने उन मसीहियों को चेतावनी दी है जो अपनी रीतियों के कारण परमेश्वर के वचन का टाल देते है: अर्थात विश्वास के निमित्त रीतियों का प्रतिपादन या परम्परागत अध्याधेश या कलीसिया की ओर से आदेश। ऐसे लोग व्यर्थ में परमेश्वर की उपासना करते हैं, क्योंकि वे मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। "क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीति को मानते हो।" (मरकुस 7:7-8; मत्ती 15:1-20।

प्रेरित पौलुस कहता है कि: "कि कभी लिखे हुए से (बाइबल में)आगे न बढ़ो(1 कुरिन्थियों 4:6)।"

और यीशु चेतावनी देते हैं कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस बाइबल में लिखी हुई हैं उस पर बढ़ाएगा। यदि कोई उस भविष्यद्वाणियों में से कुछ निकाल दे,तो परमेश्वर इस बाइबल में की गयी प्रतिज्ञाओं में से उसका नाम काट डालेगा(प्रकाशितवाक्य 22:18-19)!

बाइबल में कहीं पर भी कलीसियाओं के लिए इस आश्य की आज्ञा नहीं दी गयी है कि कब दूसरी पीढ़ी(विश्वासियों की सन्तानों) को पानी का बपतिस्मा देना चाहिए या किसी तरीके से उन्हें पानी का बपतिस्मा दिया जाना चाहिएं। इस तरह यह विवादित मुद्दे बने रहते हैं। "एक बपतिस्मा"(इफिसियों 4:4-6)पानी का बपतिस्मा दिये जाने की उम्र का जिक्र नहीं करता: अर्थात शिशु को देना चाहिए या व्यस्क विश्वासी को। और न ही यह बपतिस्मा देने के तरीके का वर्णन करता है: छिड़काव के द्वारा, पानी उण्डेलने के द्वारा या डुबकी के द्वारा)। "एक बपतिस्मा" केवल आत्मा के बपतिस्में की ओर इशारा करता है।

मसीह लोग और उनकी मण्डलियां निम्नलिखित बाइबल की आज्ञाओं और शिक्षाओं को हटा या नज़रअन्दाज नहीं कर सकते:

- शिक्षा।एक ही बपतिस्मा है-अर्थात आत्मा का बपतिस्मा(इफिसियों 4:4-6)।
- आज्ञा। जिन विषयों पर बाइबल में शिक्षा प्रदान नहीं की गयी है उसके विषय में एक दूसरे के विचारों को आदर के साथ ग्रहण करेगें। जो लोग इन कामों को नहीं करते हैं उन्हें तुच्छ नहीं जानेगें। और न हीं करने वालों पर दोष लगाएं(रोमियों 14:1-5,13-23;रोमियों 15:7)।
- आज्ञा । जिस तरह से मसीह प्रेम करता है वैसे ही एक दूसरे को प्रेम करो(यूहन्ना 13:34-35)। प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बांध लो (कुलुस्सियों 3:14)। बिना प्रेम के "मैं कुछ भी नहीं हूँ" और "मुझे कोई लाभ नहीं"(1कुरिन्थियों 13:1-3)।
- आज्ञा। मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यन्त करो। एक ही देह है और एक ही आत्मा....एक ही प्रभु,एक ही विश्वास और एक ही आत्मा।(इफिसियों 4:3-5)
- सारे मसीहियों और मसीही मण्डलियों को अपने आप से पूछना चाहिए:
- मेरी मण्डली के भीतर प्रेम और शान्ति किस चीज़ से आएगी?
- दूसरी मसीही मण्डलियों के साथ सम्बन्ध में कैसे शान्ति व प्रेम में उन्नति होगी?

3. दोनों मसीही समूहों को मसीहियों के बीच एकता लाने के लिए तीन सिद्धान्तों पर ज़ोर देना चाहिए:

- आवश्यक मुद्दों पर एकता(बाइबल की बुनियादी शिक्षाओं और आज्ञाओं में)
- अन्य मामलों में स्वीकृती(जिसके बारे में बाइबल कोई शिक्षा नहीं देती है और जिसमें मसीही एक दूसरे के साथ असहमत होते हैं)
- प्रेम ही सब कुछ है।